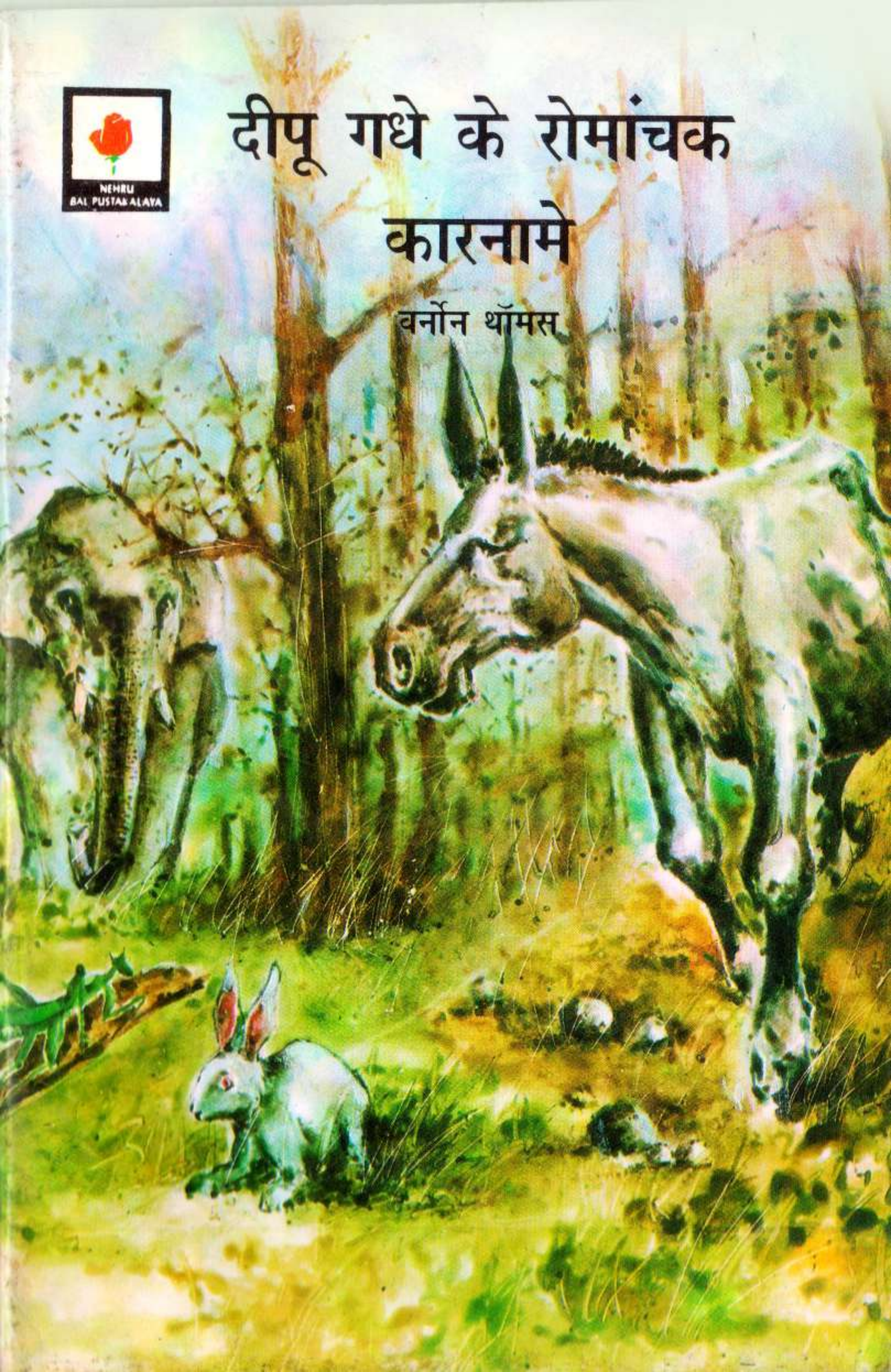
NEHRU BAL PUSTAKALAYA

दीपू गधे के रोमांचक कारनामे

वर्नोन थॉमस



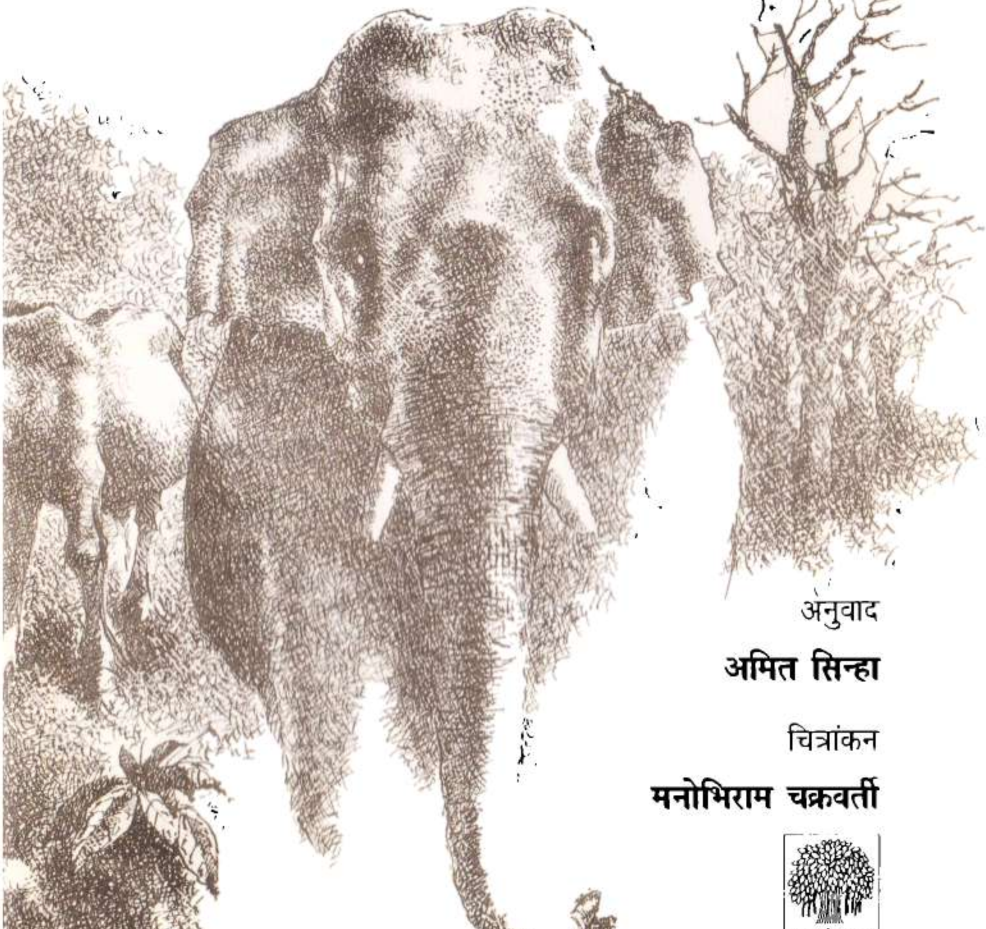


नेहरू बाल पुस्तकालय

दीपू गधे के रोमांचक कारनामे

वर्नोन थॉमस

(रशेल मैकबीन की दूरदर्शन पटकथा पर आधारित)



अनुवाद

अमित सिन्हा

चित्रांकन

मनोभिराम चक्रवर्ती

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

ISBN 81-237-0896-3

पहला संस्करण : 1994

सातवीं आवृत्ति : 2006 *(शक 1928)*

Adventures of Dipu the Donkey *(Hindi)*

रु. 14.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

ए-5 ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-110 016 द्वारा प्रकाशित

विषय सूची







दीपू की गुप्त यात्रा

बहुत पुरानी बात है, 'सोनार बागान' नामक एक बहुत ही सुंदर वन था, जिसमें एक छोटा-सा दीपू नाम का गधा रहता था। वह भी एक साधारण गधा ही था जो सारा दिन चरता रहता था। बात बहुत पुरानी नहीं है जबकि एक अंधेरी रात को दीपू अचानक बहुत प्रसिद्ध हो गया और यह सब इस प्रकार हुआ . . . .

उस विशेष रात को सोनार बागान में सारे पशु-पक्षी गहरी नींद में सोये हुए थे। 'पपरी' नामक बंदर अपने प्रिय पेड़ की टहनी से लिपटा हुआ था। 'हरी' नाम का टिड्डा घास के एक हरे टुकड़े पर आराम कर रहा था। पीपल के पुराने पेड़ पर 'पायल' तोता ऊंघ रहा था, 'मोटू' हाथी कीचड़ में अलसा रहा था। 'बंटी' खरगोश तथा 'चालू' लोमड़ घनी झाड़ियों में दुबके पड़े थे। 'बुला' मेंढक लंबी गुलाबी लिली पर, जो कि उसका घर भी था, तालाब के बीच में सोया हुआ था।

दीपू भी सूखी घास के नरम बिस्तर पर आराम कर रहा था। हमेशा की तरह वह भोजन के सपने ले रहा था। वह अपने लिए एक बहुत ही बड़ी और रस से भरपूर गाजर, जिसे उसने अपने जीवन में पहली बार देखा था, उठाने ही वाला था कि अचानक चौंक कर जाग गया। उसने पास के ही एक पेड़ की चोटी पर दो चमकती आंखों से रंगीन रोशनी निकलते देखी और वहां से आती हुई एक अजनबी-सी आवाज भी सुनी।

डर के मारे वह कूदने लगा और आश्चर्य से चिल्लाया, "वह क्या था? वह रोशनी कैसी थी? और वे आवाजें कैसी थीं?"

वह हैरान था। कहीं वह सपना तो नहीं देख रहा। उसने अपने लंबे कान फैला कर जोर से हिलाये, जोर से पूंछ फटकारी तथा फिर से देखा। वह आवाज

और रोशनी असली ही थी।

उसने ध्यान से देखा तो . . . एक चेहरा था। वह केवल एक चेहरा था न कोई शरीर, न बांहें, न ही पैर। वह चेहरा पेड़ की चोटी से उसी को घूर रहा था। उससे लगातार चमकदार लाल, नीली, हरी, पीली, सतरंगी रोशनी आ रही थी। दीपू ने इस तरह की चीज पहले कभी नहीं देखी थी। वह वहां से भाग जाना चाहता था लेकिन उसे लगा जैसे उसके खुर जमीन में गड़े हुए हों। वह भयभीत था, लेकिन फिर भी उस चेहरे से अपनी आंखें नहीं हटा पा रहा था।

अचानक वह चेहरा उसे संबोधित करने लगा, "डरो मत, दीपू" मुस्कराते हुए उसने कहा, "मैं अंतरिक्ष से आया हूं। मैं तुमसे मिलने के लिए गुप्त यात्रा पर आया हूं।"

"तुम मेरा नाम कैसे जानते हो?" दीपू ने आश्चर्य से पूछा।

"मैं तुम्हें अच्छी तरह से जानता हूं", चेहरे ने जवाब दिया। "मैं हैली साहब का संदेशवाहक हूं। क्या तुमने हैली धूमकेतु के बारे में सुना है? क्या तुम जानते हो कि धूमकेतु क्या होता है? धूमकेतु एक पूंछ वाला तारा होता है। यह भी सूर्य के चारों ओर अन्य ग्रहों की ही तरह घूमता है। लेकिन यह तभी दिखायी पड़ता है जब यह सूर्य के बहुत पास जाता है और उल्का के टुकड़ों तथा अन्य सामग्री से एक लंबी पूंछ बना लेता है। इस हैली धूमकेतु का नाम एक अंग्रेज खगोलविद् एडमंड हैली के नाम पर पड़ा है, जिसने इसकी खोज की थी। यह पृथ्वी पर प्रत्येक 76 वर्ष बाद दिखायी देता है।"

"मैने हैली धूमकेतु के बारे में सुना है", दीपू ने कहा।

"हैली साहब तुम्हारी मदद चाहते हैं", चेहरे ने या कहा जाय कि दूत ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा।

दीपू ने आश्चर्य से अट्टाहास करते हुए कहा, "उन्हें मेरी मदद! मैं उनकी कैसी सहायता कर सकता हूं? आखिरकार मैं गधा ही तो हूं।"

"इससे कोई अंतर नहीं पड़ता", दूत ने मुस्कराते हुए कहा। "सिर्फ इतना बताओ, कि तुम हैली साहब की सहायता करोगे?"

दीपू विरोध करने ही जा रहा था कि उसने अपने पीछे से कुछ आवाज सुनी। उसने पीछे घूमकर देखा तो हरी टिड्डा तथा पपरी बंदर वहां खड़े थे।

उसने आश्चर्य भरे स्वर में कहा, "अरे! हरी और पपरी! तुम लोग यहां कैसे?"

हरी ने कहा, "हमने आवाजें सुनी तो यह देखने चले आये कि यहां क्या हो रहा है?"

"अच्छी बात है, ये हैली साहब के दूत हैं', दीपू ने कहा। "हैली साहब को मेरी आवश्यकता है, लेकिन मैं उनकी क्या मदद कर सकता हूं? आखिरकार मैं गधा ही तो हूं।"

"मेरे विचार में तुम बहुत बड़ी गलती कर रहे हो।" वह एक बार फिर से दूत को सुनाते हुए बोला। "जहां तक मैं जानता हूं केवल आदमी ही इतना चालाक है कि हैली साहब की मदद कर सकता है। इसलिए तुम्हें आदमी से बात करनी चाहिए, मुझसे नहीं।"

दूत ने अपना सिर हिलाया, "नहीं, दीपू। आदमी कभी मदद नहीं कर सकता। आदमी से मदद मांगना बहुत खतरनाक होगा। हैली साहब जो चाहते हैं, वह बताने से पहले तुम्हें मुझसे एक वादा करना होगा कि इस बारे में आदमी को तुम कुछ नहीं बताओगे। क्या तुम वादा करते हो?"

दीपू ने कहा, "ठीक है, मैं वादा करता हूं, अब तुम बताओ कि मुझे क्या करना होगा?"

दूत ने बताया, "अच्छा, ऐसा है कि कुछ देर पहले हैली धूमकेतु पूरी गति से परिभ्रमण कर रहा था। वह पृथ्वी से ज्यादा दूर नहीं था कि अचानक उसकी पूंछ से हीरा निकल कर नीचे गिर गया। यह कोई साधारण हीरा नहीं है। इसमें धूमकेतु की शक्ति का रहस्य छिपा है। बिना हीरे के धूमकेतु अपनी पूंछ खो देगा। बिना पूंछ के धूमकेतु समाप्त हो जायेगा। अब तुम समझ गये होंगे कि यह कितनी गंभीर बात है।"

दीपू ने सहमति प्रकट की। "मैं समझ गया कि हैली साहब की प्रतिष्ठा बिना धूमकेतु के समाप्त हो जायेगी।"

"हां-हां ऐसा ही है", दूत ने कहा। "लेकिन यही सब कुछ नहीं है यदि हीरा किसी बाहरी अंतरिक्ष में गिर जाता तो इतना बुरा नहीं होता। वह तो पृथ्वी पर गिर गया है। यहीं कहीं सोनार बागान में गिरा है। यह बहुत गंभीर बात है। यदि हीरा आदमी को मिल गया तो वह इस ब्रह्मांड का सबसे शक्तिशाली प्राणी बन जायेगा। यदि उसकी शक्ति का प्रयोग किसी ने बेवकूफी से कर दिया तो न केवल पृथ्वी बल्कि संपूर्ण ब्रह्मांड नष्ट हो जायेगा। हम आदमी को जानते हैं इसलिए इस तरह का खतरा मोल नहीं ले सकते। मैं समझता हूं कि अब तक तुम समझ गये होंगे कि आदमी को वह हीरा क्यों नहीं मिलना

[illegible]। इसलिए हैली साहब ने तुम्हें इस कार्य के लिए चुना है।"

"तब तो मैं आपके लिए हीरे को ढूंढूंगा।" दीपू ने कहा, "मैं उसे अभी से तलाशना शुरू कर देता हूं।"

"बहुत अच्छा", दूत ने मुस्कराते हुए कहा। "हैली साहब बहुत खुश होंगे। लेकिन यह याद रखना कि तुम्हें हीरा सूर्योदय होने से पहले ढूंढकर देना होगा। अगर तुम ऐसा नहीं कर पाओगे तो हैली धूमकेतु को अपनी पूंछ गंवानी पड़ेगी। तथा यह धूमकेतु समाप्त हो जायेगा।"

"हां, हां, मैं समझ गया", दीपू ने जल्दी से कहा।

"मैं उसकी खोज अभी से शुरू कर देता हूं। मैं अपने सभी दोस्तों से अपनी सहायता करने के लिए कहता हूं।"

"हां, हां, ऐसा ही करो", दूत ने कहा। इसके साथ ही रंगीन चमकने वाली रोशनी धीमी होते-होते दृष्टि से ओझल हो गयी।





कार्य के लिए मित्र तैयार हुए

एक बार फिर से अंधेरा सोनार बागान पर घिरने लगा तो दीपू, हरी और पपरी ने एक दूसरे को चकित होकर देखा।

"यह एक स्वप्न-सा लगता है", दीपू ने कहा। "क्या तुम निश्चित तौर पर कह सकते हो कि वास्तव में ऐसा हुआ है?"

"वास्तव में ऐसा हुआ है", पपरी ने कहा। "मैंने अपनी आंखों से देखा है।"

हरी ने कहा, "मैंने भी देखा है। वैसे यह विश्वास करना उतना ही कठिन है जैसे कि कोई कहे कि टिड्डे को गधे की पूंछ लगी हुई थी। लेकिन दीपू मैं तुम्हारी सहायता करूंगा। मैं सोनार बागान की घास के एक-एक तिनके से परिचित हूं। अगर हीरा यहीं कहीं घास में है तो मुझे पूरा विश्वास है कि मैं उसे अवश्य ढूंढ लूंगा।"

"अगर वह कहीं पेड़ों में है तो मुझे पूरा विश्वास है कि मैं उसे ढूंढ लूंगा", पपरी ने कहा।

"यह तुम दोनों की सहृदयता है", दीपू ने कृतज्ञता से कहा। "फिर भी मैं सोचता हूं कि हमें कुछ और लोगों को जगाकर उनसे सहायता करने के लिए कहना चाहिए। हम लोग पायल तोते, मोटू हाथी और बंटी खरगोश से भी कहते हैं।"

"चालू लोमड़ के बारे में क्या विचार है?" पपरी ने पूछा।

दीपू ने अपना सिर हिलाया। "मैं सोचता हूं कि चालू को इस कार्य से अलग ही रखना चाहिए। तुम लोग जानते ही हो कि उसका हममें से किसी के साथ भी दोस्ताना व्यवहार नहीं है। वह आदमी को हमारा रहस्य बता सकता है। उसने कभी भी इस जंगल का दौरा नहीं किया। इस बारे में अभी तक कोई भी आश्वस्त नहीं है।"

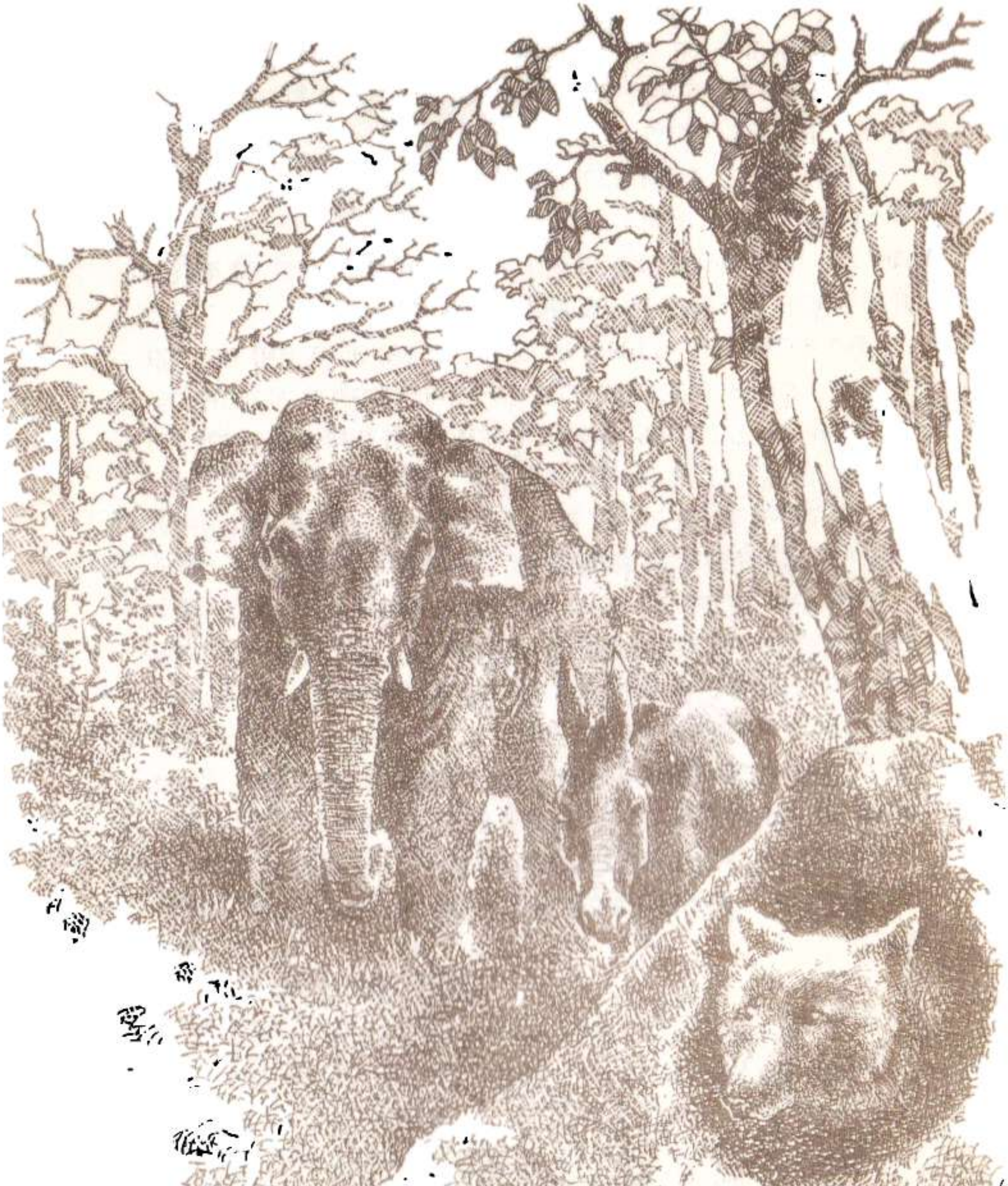
"हां, मैं समझता हूं कि चालू को इस काम से बाहर रखने का विचार अच्छा है" हरी ने कहा। "लेकिन तुला मेंढक के बारे में क्या विचार हैं? क्या हमें उसकी मदद नहीं मांगनी चाहिए?"

"हम अवश्य मांग सकते हैं", दीपू ने कहा। "लेकिन तुम बुला को जानते ही हो, वह इतना उनींदा रहता है कि उसे जगाने के लिए हमें बहुत जोर-जोर से चिल्लाना पड़ेगा। इसमें बहुत ही खतरा है और बुला के तालाब से चालू की मांद भी बहुत पास है। अगर चालू ने हमें बुलाते हुए सुना तो वह निश्चित ही ताक-झांक करने चला आयेगा। और हम लोग ऐसा कभी नहीं चाहेंगे, क्या हम सब ऐसा चाहेंगे?"

"नहीं, हम लोग ऐसा नहीं चाहते", पपरी ने दृढ़ता से कहा। "ऐसी स्थिति में बेहतर यही रहेगा कि बुला को भी छोड़ दिया जाये।"

जैसे ही यह मसला हल हुआ, तीनों मित्र शीघ्र ही पायल, मोटू और बंटी को जगाने चले गये। जब ये तीनों बात को समझ गये तो तुरंत मदद के लिए तैयार हो गये। उन छहों ने तय किया कि उन्हें हीरे की खोज के लिए अलग-अलग दिशाओं में जाना चाहिये। हरी और बंटी घास के हरेक तिनके को उलटने-पुलटने लगे। पायल और पपरी ने हरेक पेड़ की टहनियों में देखना शुरू कर दिया जब कि दीपू और मोटू ने जमीन पर अपनी आंखें गड़ाये जंगल के चप्पे-चप्पे पर खोजना शुरू कर दिया।

खोज के दौरान दीपू और मोटू को चालू की मांद के पास से भी गुजरना पड़ा। चालू की नींद कच्ची थी, मोटू के भारी पैरों से उसकी नींद खुल गयी। चालू तुरंत बाहर निकल आया। उसने आसपास देखा तो उसे दीपू और मोटू दिखायी दिये। उन्हें वहां देखकर वह आश्चर्य में पड़ गया। फिर उसने पास के ही पेड़ पर पायल और पपरी को भी देखा। इससे उसे और भी शक हो गया। चालू ने तय किया कि वह पता लगाकर रहेगा कि यह क्या हो रहा है। पंजों के बल चलता हुआ चालू बुला के तालाब के पास से गुजर रहा था कि उसने अचानक अनुभव किया कि तालाब से चमकदार सुनहरी रोशनी आ रही है। उत्सुकतावश, पास से एक झलक देखने के लिए वह उसके किनारे तक गया। वह चकित था कि पूरा तालाब सतह से ऊपर तक प्रकाश से जगमगा रहा था। तालाब में हरेक चीज बिल्कुल साफ दिखायी दे रही थी—प्रत्येक तैरती हुई मछली, तालाब के अंदर पड़े हुए जीव। यहां तक कि लिली भी अपनी जड़ों तक साफ दिखायी दे रही थी।



चालू को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। वह आश्चर्यचकित था कि प्रकाश कहां से आ रहा है। अंततः उसने उस जगह को ढूंढ ही लिया। तालाब के एक कोने में बहुत नीचे तल में एक पत्थर पड़ा था, जिससे चमकदार सुनहरी प्रकाश की किरणें फूट रही थीं।

"मुझे आश्चर्य हो रहा है कि किस तरह का यह जादुई पत्थर है!", चालू ने वहां से जाते हुए सोचा।

वह अभी तक आश्चर्यचकित था और लगातार यह पता लगाने की कोशिश में लगा हुआ था कि अन्य लोग क्या कर रहे हैं?

बुला गुलाबी लिली के बिस्तर पर आराम कर रहा था कि तभी चालू वहां से गुजरा। बुला चौंक कर जाग गया। उसने उनींदी आंखों से आसपास देखा और अचानक उसे लगा कि चमकदार सुनहरी रोशनी से तालाब जगमगा रहा है।

"यह रोशनी कहां से आ रही है?" उसने अपने आप से पूछा और गुलाबी लिली के कोने से पानी में झांका।

उसने देखा कि एक चमकदार पत्थर तालाब की तलहटी में एक कोने में पड़ा है। उत्सुकतावश उसने पानी में छलांग लगायी और तैर कर नीचे तक पहुंच गया। पत्थर के पास पहुंचने से पहले उसने कुछ क्षण उसे घूरा फिर यह तय करके कि इससे कोई नुकसान नहीं होगा उसने उसे उठा लिया और उसे लेकर अपनी गुलाबी लिली के पास पहुंच गया। उसने पत्थर को लिली की पत्तियों के बीच छिपा दिया और फिर से सोने चला गया।

"मैं नहीं जानता, कि यह क्या चीज है। लेकिन यह बहुत ही मनोहर है और मैं इसे अपने पास ही रखूंगा", सोने जाने से पहले उसने अपने आप से कहा।



चालू का मोल-भाव करना

इस बीच छहों मित्र हीरे को ढूंढने में लगे हुए थे। कुछ समय बाद वे सभी एक पुराने आम के वृक्ष के नीचे अपनी-अपनी यात्रा का विवरण देने के लिए जमा हुए।

"हमने घास का तिनका-तिनका छान मारा लेकिन हमें हीरा नहीं मिला", हरी और बंटी ने दुखी होकर कहा।

पपरी और पायल ने कहा, "यद्यपि हमने भी हरेक पेड़ की टहनी को टटोल लिया लेकिन उसे ढूंढने में हम भी सफल नहीं हो पाये। दीपू और मोटू का क्या हुआ?"

दीपू और मोटू ने उदास होकर इंकार में अपने सिर हिला दिये। मोटू ने कहा, "हमने भी हरेक जगह ढूंढ लिया लेकिन उसे ढूंढने में असफल रहे।"

"लेकिन हीरा यहीं कहीं पर है", दीपू ने जोर देकर कहा। "हैली साहब के दूत ने कहा था कि वह सोनार बागान में ही कहीं गिरा है और वह गलत नहीं हो सकता।"

"तब वह है कहां?" पपरी चीखा।

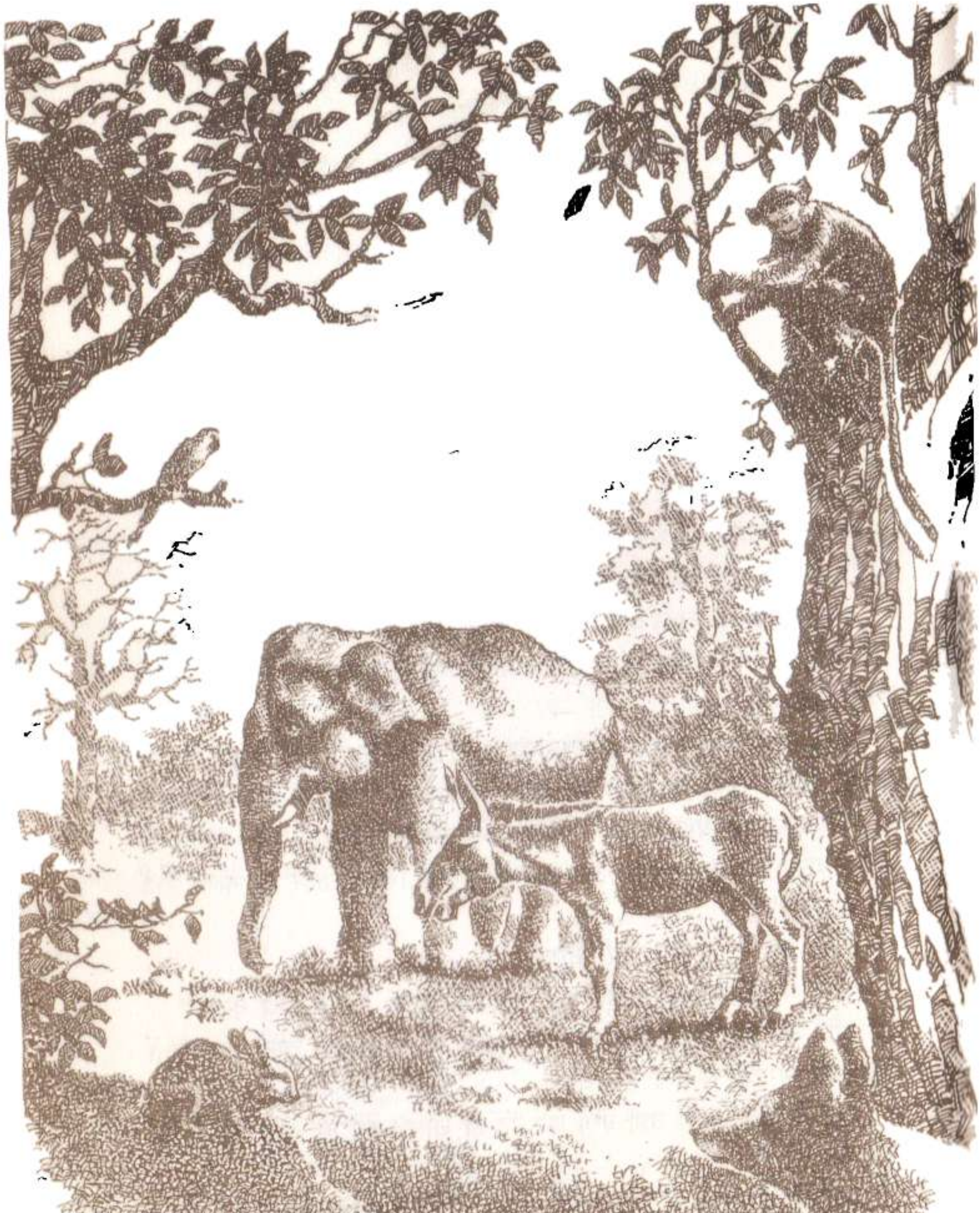
बीच में हस्तक्षेप करते हुए एक आवाज आयी, "तुमने क्या कहा?"

और जब छहों मित्रों ने अपने पीछे घूमकर देखा, तो वहां चालू खड़ा-खड़ा शक की निगाहों से देख रहा था।

दीपू ने पूछा, "तुम यहां क्या कर रहे हो चालू? हम तो सोच रहे थे कि तुम सो रहे हो।"

चालू ने चालाकी से टोकते हुए कहा, "ठीक है, तुम्हें भी तो इस समय सोते हुए होना चाहिए था। तुम लोग क्यों जाग रहे हो?"

छहों चुप थे। उनकी समझ में नहीं आया कि क्या कहें। तब दीपू अपने



दोस्तों से फुसफुसाया, "चूंकि मामला बहुत शीघ्रता का है, क्या तुम सोचते हो कि हमें इसे बताना चाहिए? शायद यह हमारी सहायता कर सके।"

दीपू ने सारा मामला अपने हाथ में ले लिया जबकि अन्य सभी इस बारे में झिझक रहे थे। उसने चालू पर विश्वास कर उसे एक अवसर प्रदान करने का निश्चय किया।

उसने कहा, "अच्छा चालू सुनो, हम लोग एक हीरा ढूंढ रहे हैं। यह हीरा हैली धूमकेतु से सोनार बागान में कहीं गिर गया है। हैली साहब ने उसे ढूंढने का काम मुझे सौंपा है। मुझे उसे सूर्योदय से पहले ढूंढना है, नहीं तो हैली धूमकेतु को अपनी पूंछ गंवानी पड़ेगी और फिर धूमकेतु समाप्त हो कर मात्र तारा बन जायेगा। यह बहुत ही गंभीर बात है तुम समझ सकते हो।"

इससे चालू की आंखों में धूर्त्तताभरी चमक पैदा हो गयी। हीरे के महत्व में उसकी बिल्कुल रुचि नहीं थी, बल्कि वह यह अंदाज लगा सकता था कि हीरा कहां मिल सकता है। बुला का तालाब! तालाब के तल में चमकने वाला वह पत्थर, निश्चित रूप से हीरा ही होगा। प्रकाश की सुनहरी किरणें निकलने का कारण केवल हीरा ही हो सकता है।

"मैं जानता हूं कि हीरा कहां हैं", वह बोला। "मैं तुम्हें बता सकता हूं कि हीरा कहां मिल सकता है।"

"क्या तुम वास्तव में बता सकते हो चालू", दीपू ने व्यग्र होकर पूछा।

"हां मैं बता सकता हूं, मैं वाकई बता सकता हूं", चालू ने धूर्त्तता से कहा। "लेकिन तुम मुझे इसके बदले में क्या दोगे?"

"हम तुम्हें कुछ भी दे सकते हैं, जो तुम चाहते हो, चालू", दीपू ने उतावला हो कर वादा कर दिया।

"कुछ भी! तब तो मुझे सोचने दो", चालू ने कहा।

उसने अपना मन बनाने के लिए उनके दल के चारों ओर निगाह दौड़ाई तो उसकी आंखें बंटी पर टिक गयीं।

"खरगोश का सिझाना कोई बुरा विचार नहीं है", उसने सोचा। वह फल और सब्जियां खाते-खाते थक गया था।

किसी पशु या पक्षी को खाना सोनार बागान के नियमों के विरुद्ध था। खरगोश को सिझाना एक नया बदलाव होगा। उसने कहा, "एक शर्त है! यदि बंटी कल सुबह मेरे साथ आकर नाश्ता करे, तो मैं बता सकता हूं कि वह हीरा कहां है?"

"यह तुम्हारी एक मात्र शर्त है?" दीपू ने पूछा।

"बंटी निश्चित रूप से कल सुबह तुम्हारे साथ सुबह का नाश्ता करेगा। अब हमें बताओ कि हीरा कहां है?"

"मैं बताता हूं", चालू ने वादा किया। "पांच मिनट के अंदर तुम लोग मुझे बुला के तालाब पर मिलो।" यह कहकर वह वहां से चला गया।

"तुमने यह क्या किया, दीपू?" बंटी ने कांपते हुए कहा। "तुम्हें ऐसा नहीं लगता कि केवल मुझे नाश्ते पर बुलाना, चालू की नाश्ते में मुझे खाने की एक चाल है?"

"हाय मित्र, मैं भी कितना बड़ा मूर्ख हूं", दीपू गलती मानते हुए चिल्लाया। "मैंने इस बारे में तो सोचा ही नहीं था...लेकिन फिर भी, हीरा ढूंढने की यही एक अंतिम आशा है।"

"हमारी आखिरी आशा", दीपू के इस कथन से आहत हो कर आश्चर्य से पपरी ने कहा, "जरा सोचो तो बेचारे बंटी का क्या होगा?"

"हां, बंटी का जीवन काफी खतरे में है", हरी ने गंभीर होकर कहा। "हम ऐसी किसी बात पर सहमत नहीं हो सकते, जिसमें उसकी जान को खतरा हो।"

इस बीच बंटी चुपचाप, विचारों में खोया हुआ था। अचानक वह बोल पड़ा, "ठीक है, मैं सहमत हूं।" उसने कहा, "मैं चालू का निमंत्रण स्वीकार करूंगा।"

"नहीं तुम नहीं करोगे", पपरी और हरी ने एक साथ विरोध किया।

लेकिन, बंटी ने अपना मन इसके लिए तैयार कर लिया था। "मैं सहमत हूं", उसने साहस के साथ जोर देकर कहा। "इसका मतलब आखिर हैली साहब का हीरा खोजने से ही तो है। हम उन्हें नीचा नहीं दिखा सकते। समय आने पर मैं चालू का सामना करूंगा। मैं देखूंगा कि मैं अपने को बचाने के लिए क्या कर सकता हूं।....खैर, हमारे पास व्यर्थ गंवाने के लिए समय नहीं है। जल्दी करो, हमें बुला के तालाब पर चलना चाहिए।"



चालाकी से चालू को मात

जब वे लोग तालाब पर पहुंचे, तो देखा कि चालू गुस्से से आग बबूला हो रहा था। वह गुस्से से अपने पैर पटक रहा था और बुला पर चिल्ला रहा था, "धोखेबाज, मुझे हीरा वापस दे दो। मुझे पता है कि वह तुम्हारे पास है। वह मेरा है। पहले मैंने उसे देखा था।"

लेकिन बुला ऐसा अभिनय कर रहा था जैसे इस मामले में कुछ न जानता हो। "तुम किस बारे में बात कर रहे हो", उसने मासूमियत से पूछा। "कैसा हीरा? मैंने कोई हीरा नहीं देखा।"

"वह तुम्हारे पास ही है", चालू ने जोर देकर कहा। "अब से कुछ देर पहले जब मैं यहां से गुजरा था तो पूरा तालाब सुनहरी रोशनी से जगमगा रहा था। उसके तल में, एक कोने में एक हीरा पड़ा था जो किसी चमकदार प्रकाश की तरह जगमगा रहा था। अब मैं देख रहा हूं कि वह दीप्ति गायब है, साथ में हीरा भी। केवल एक व्यक्ति ही उसे ले सकता है और वह तुम हो बुला! वह मुझे दे दो। वह मेरा हीरा है। उसे पहले मैंने देखा था।"

"हां बुला", दीपू ने कहा। "यदि हीरा तुम्हारे पास है तो कृपया उसे हमें दे दो। वह हैली साहब का है। वह हैली धूमकेतु से यहीं कहीं सोनार बागान में गिर गया है। यदि वह हीरा वापस नहीं किया गया तो धूमकेतु अपनी पूंछ खो देगा और वह धूमकेतु समाप्त हो जायेगा। चलो बुला, दोस्ती के नाते ऐसा करो।"

पूरी कहानी सुनने के बाद बुला ने सच्चाई बताने का फैसला किया। "अच्छा, ठीक है दीपू", उसने कहा। "यदि हीरा वही है जिसे तुम कह रहे हो, तो वह मेरे पास ही है। लेकिन जैसाकि तुम जानते हो कि यह तालाब मेरा है अतः उस पर अधिकार भी मेरा ही है।"

"नहीं ऐसा नहीं है", चालू ने बहस करते हुए कहा। "यह मेरा है क्योंकि इसे पहले मैंने देखा था।"

"यह तुम दोनों में से किसी का भी नहीं है", दीपू ने टोकते हुए कहा। "यह हैली साहब का है और हमें इसे तुरंत लौटा देना चाहिए। आओ, बुला अब हीरा हमें सौंप दो। हमारे पास ज्यादा समय नहीं है। उसे हर कीमत में सूर्योदय से पहले वापिस करना है। जल्दी करो!"

बुला हीरा सौंपने के लिए राजी हो गया। उसने उसे लिली की पत्तियों के बीच से बाहर निकाला और बिस्तर से छलांग लगाकर किनारे पर जाने के लिए रास्ता बनाया। उसने दीपू को हीरा सौंपते हुए थोड़ी रुखाई से कहा, "तुम यहां हो, चूंकि तुमने कहा है कि यह महत्वपूर्ण है, इसलिए तुम्हें यह हीरा वापिस दे रहा हूं । लेकिन यह मेरा ही है, क्योंकि यह मुझे मिला है। वैसे भी यह मेरा तालाब है और मैं इसे अपनी पत्नी को भेंट देने की सोच रहा था।"

हीरा मिलने से उन छहों मित्रों में खुशी की लहर दौड़ गयी।

"अब हमें हैली साहब के दूत की प्रतीक्षा करनी चाहिए तथा हीरा उनके हाथ में सौंप देना चाहिए", दीपू ने कहा।

"हां, अवश्य..., हैली साहब अवश्य ही खुश हो जायेंगे।" पपरी, हरी, मोटू और पायल ने एक साथ कहा।

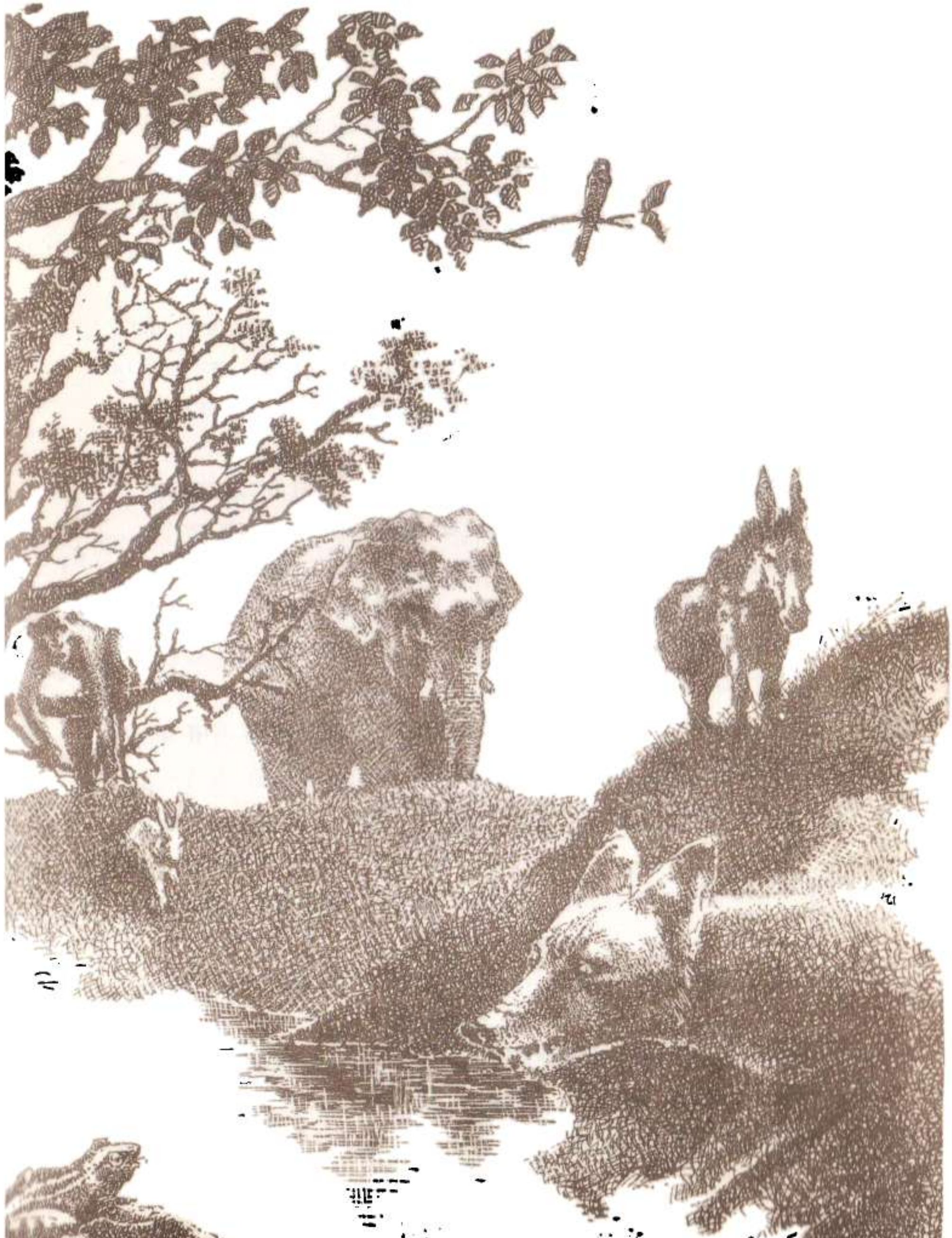
केवल बंटी चुप था। वह चालू पर नजर रखे हुए था जो कि उसके पास ही खड़ा हुआ धूर्त्त मुस्कान के साथ मुस्करा रहा था।

"हां, अवश्य ही तुम्हें हैली साहब का हीरा उन्हें दे देना चाहिए", चालू ने बीच में ही कहा। "लेकिन दीपू मेरे साथ हुए सौदे को मत भूलना। बंटी को कल सुबह मेरे साथ ही नाश्ता करना होगा।"

"ओ मित्र, मैं तो इस बारे में लगभग भूल ही गया था," दीपू ने थोड़ा चौंक कर कहा। वास्तव में हीरा मिलने के उत्साह में बंटी और उसके भाग्य की बात दीपू के दिमाग से निकल गयी थी।

दीपू ने अब निराश होकर सोचा, "बेचारे बंटी को बचाने के लिए मैं क्या कर सकता हूं?" तभी उसके दिमाग में एक विचार आया। उसने हीरे को और मजबूती से पकड़ लिया।

"ओह, हैली साहब का वह जादुई हीरा!" दीपू चुपचाप प्रार्थना करते हुए बुदबुदाया। " कृपया हमारी सहायता करो। बंटी को चालू के खाने से बचा लो।" दीपू ने अभी अपने शब्द पूरे भी नहीं किये थे कि तभी अचानक जैसे



[illegible] प्रार्थना के जवाब में बंटी का कद बढ़ने लगा। क्षणों के गुजरने के साथ-साथ बंटी बड़ा होता गया और तब तक बढ़ता रहा जब तक वह लगभग चालू के कद के बराबर नहीं हो गया। वे सभी आश्चर्य से बंटी को देखने लगे। केवल दीपू को सचाई मालूम थी और वह बहुत आभारी था।

चालू सचेत हो गया। बंटी को इतना विशाल बनते देख उसे डर लगने लगा। उसे लगा कि बंटी को खाने की जगह कहीं बंटी ही उसे न खा जाये।

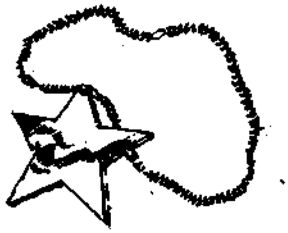
"दीपू, दीपू, मेरे मित्र!" उसने जल्दी से कहा। "मैंने अपना विचार बदल दिया है। अब बंटी को मेरे साथ नाश्ता करने की जरूरत नहीं है। हमारा सौदा समाप्त हो गया। तुम समझ गये न?"

"हां, मैं समझ गया", दीपू ने राहत की सांस लेते हुए कहा और अन्य भी खुशी से चिल्लाने लगे। यहां तक कि बंटी भी प्रसन्न हो गया। जब बंटी धीरे-धीरे छोटा होने लगा और छोटा होते-होते अंततः अपने सामान्य कद का हो गया तो सभी आश्चर्यचकित हो गये।

अब, फिर से चालू उसे नाश्ते में खाना चाहता था लेकिन यह संभव नहीं था क्योंकि अब समझौता समाप्त हो गया था। चालू यह समझ रहा था कि सोनार बागान में कोई भी उसके शब्दों पर विश्वास नहीं करेगा। वह दुखी था कि उसे फिर से सब्जी और फल खाकर ही जीवित रहना पड़ेगा। उसने खरगोश को सिझाने का विचार छोड़ दिया । चालू चुपचाप खीझ कर अपनी मांद की ओर जाने लगा।

"अच्छा, छुटकारा मिला", दीपू ने कहा और फिर उसने अन्य सभी को बताया कि किस प्रकार उसने बंटी को बचाया।





कार्य संपन्न हुआ

दीपू ने मुश्किल से अभी कहानी समाप्त ही की थी कि अचानक पेड़ों के ऊपर से रंगीन चमकदार प्रकाश चमकने लगा।

"यह हैली साहब के दूत हैं। हीरा लेने आये हैं", दीपू ने उत्साहित होकर घोषणा की जिससे सभी का ध्यान ऊपर टहनियों की ओर मुड़ गया।

हरेक यह सोच रहा था कि दूत का चेहरा दिखाई देगा लेकिन तब उनके आश्चर्य की सीमा न रही जब उन्होंने वहां पूरे आदमी का आकार खड़ा देखा। वह हरा सूट पहने हुए था तथा उसके कंधों पर लाल घड़ी लगी हुई थी। उसके सिर पर चांदी के रंग का बक्स रखा हुआ था जिसमें से बीप-बीप तथा बजर की और अन्य अनेक अजीबोगरीब आवाजें आ रही थीं। उसकी आंखें गोल और गहरी नीली थीं तथा ठोड़ी किसी तारे की तरह चमक रही थी। उसकी उंगलियों में बहुत-सी हीरे की अंगूठियां चमक रही थीं।

"बधाई हो, मित्रो", उसने कहा। "मैं ही हैली साहब हूं।"

"हैली साहब, आपको देखकर कितना अच्छा लग रहा है", दीपू ने कहा। "सोनार बागान में आपका स्वागत है।"

"धन्यवाद," हैली साहब ने हाथ हिलाते हुए कहा। "क्या तुम्हें मेरा हीरा मिल गया?"

"सचमुच हमने ढूंढ ही लिया श्रीमान!"-दीपू ने गर्व के साथ जवाब दिया, और उन्हें हीरा सौंप दिया।

हैली साहब बहुत प्रसन्न थे। "दीपू, मैं तुम्हारा और तुम्हारे मित्रों का हीरा ढूंढने के लिए धन्यवाद करता हूं", उन्होंने कृतज्ञता से कहा। "तुमने मेरा बहुत बड़ा काम किया है। मैं तुम्हें इस उपकार के बदले एक बहुमूल्य भेंट देना चाहता हूं।"



ज्यों ही उसने यह कहा, ऊपर बहुत दूर एक रोशनी चमकनी शुरू हो गयी। धीरे-धीरे वह पास आती गयी और पल-पल उसकी चमक तेज होती गयी। उसके मित्र इस दृश्य को देखते रहे, उन्होंने देखा कि एक छोटा-सा सितारा उनके बीच में उतर आया। वह नीचे आया और दीपू के पैरों के पास आकर बैठ गया।

अपनी भेंट को उठाने के लिए झुकते हुए दीपू ने कहा, "सितारा! कितना प्यारा है। धन्यवाद श्रीमान!"

हैली साहब ने बताया, "हां, यह प्रेम का सितारा है। यह मेरा विशिष्ट उपहार तुम्हारे लिए है। इस सितारे को हमेशा अपने पास रखना और फिर प्रेम को बढ़ते रहने देना। केवल प्रेम ही तुम्हारे संसार को सुखी रख सकता है। इसकी बहुत अच्छी तरह देखभाल करना, दीपू! यह तुम्हारे लिए बहुत उपयोगी रहेगा।"

"एक बार फिर से धन्यवाद, हैली साहब", दीपू ने कहा। "अब से मैं इस सितारे को अपने गले में जंजीर में डालकर पहनूंगा। मैं पहनूंगा...

वह वाक्य बोलते-बोलते बीच में ही रुक गया क्योंकि उसने अनुभव किया कि हैली साहब वहां से अदृश्य हो गये हैं और उनके साथ-साथ वह तेज रोशनी भी। सोनार बागान में एक बार फिर से अंधेरा हो गया था, वास्तव में अंधेरा नहीं, बल्कि उषाकाल की पहली किरण पेड़ों के ऊपर से झांकने लगी थी।

सभी मित्र चुप थे। वे आसपास आश्चर्य से देख रहे थे।

"क्या तुम्हें लगता है कि हम लोग स्वप्न देख रहे थे?" पपरी ने संदेह करते हुए पूछा।

"शायद हम लोग स्वप्न ही देख रहे थे", हरी ने आंखें मिचमिचाते हुए कहा। लेकिन दीपू ने सितारे को देखा और अपना सिर हिलाते हुए कहा, "नहीं यह सब सच था।" उसने कहा, "हमें वैसा ही करना चाहिए जैसाकि हैली साहब ने कहा है। हमे प्रेम बढ़ाना चाहिए। मेरे विचार में पहला प्राणी चालू ही है जिसके प्रति हमें प्रेम दिखाना चाहिए।"

पायल ने कर्कश स्वर में कहा, "चालू! चालू से कौन प्रेम कर सकता है?"

"हां, कौन कर सकता है?" मोटू ने पूछा। "चालू धूर्त्त और चालाक है" पपरी, हरी और बंटी ने भी सहमति जतायी।

दीपू ने एक बार फिर से अपना सिर हिलाया। "मेरे विचार से चालू ऐसा इसलिए है क्योंकि हम में से कोई भी उससे प्यार नहीं करता।" उसने कहा, "हमें अवश्य ही चालू का मित्र बनने की कोशिश करनी चाहिए। संभव है

वह हमारे प्रेम से बदल जाये। चलो, हमें कोशिश करनी चाहिए। मुझे विश्वास है कि हैली साहब भी ऐसा ही चाहते थे।"

"ठीक है, मैं भी ऐसा ही चाहता हूं", बंटी ने कहा।

"इसके लिए हमें चालू के पास चलना चाहिए और उससे हम सबका मित्र बनने के लिए कहना चाहिए।" इसके लिए अन्य सभी सहमत हो गये तथा सभी चालू की मांद तक चलने के लिए तैयार हो गये।

चालू अभी तक खीझा हुआ था और उन लोगों को वहां देखकर और भी आश्चर्यचकित था। उन लोगों से दोस्ती का निमंत्रण पाकर वह और भी आश्चर्य में पड़ गया था।

"तुम्हारा मतलब है कि मेरी इन करतूतों के बावजूद तुम लोग मेरे दोस्त बनना चाहते हो", उसने शर्मिंदगी के स्वर में पूछा।

"हां, हम सभी तुम्हारे मित्र बनना चाहते हैं", दीपू ने जोर देकर कहा। "हमारी कोई शर्त भी नहीं है, क्या तुम्हें मंजूर है?"

चालू ने, थोड़ा परेशान होते हुए कहा, "ठीक है।"

उसी क्षण से वह उन सबका मित्र बन गया। कुछ समय में ही वह बदल गया। उसने अपनी धूर्त्तता एवं चालाकी के सभी रास्ते त्याग दिये। जहां तक दीपू का सवाल है, वह भी हीरे वाली इस घटना के बाद बदल गया। वह न केवल सोनार बागान में प्रसिद्ध हो गया बल्कि उसका जीवन भी पहले जैसा नहीं रहा जैसाकि हम आगे देखेंगे।





जोखिमों की तलाश में

उस सुबह तेज चमकदार धूप निकली हुई थी। सोनार बागान के ऊपर आकाश प्रायः काफी नीला था लेकिन कुछ सफेद रोएंदार बादल उसमें तैर रहे थे। पेड़ों की पत्तियां ताजा एवं हरी थीं तथा पेड़ फलों से लदे हुए थे। पक्षी टहनियों पर प्रसन्न हो कर गा रहे थे। जमीन पर लंबी घास उगी हुई थी तथा वहां सभी जगह फूल खिले हुए थे।

वह एक ऐसा दिन था जब किसी का भी मन प्रसन्न होता। लेकिन जब कि सब लोग बहुत प्रसन्न नजर आ रहे थे, दीपू दुखी एवं उदास था।

"कितनी सुहावनी सुबह है", पपरी ने गाते हुए कहा और टहनी से झूलते हुए जहां दीपू बैठा था, उसके पास आ गया। "आज का दिन पिकनिक मनाने के लिए कितना सुहावना है? तुम्हारा क्या विचार है?" दीपू ने कोई जवाब नहीं दिया। वह घुरघुराया और सामने की ओर टकटकी लगाये देखता रहा।

"दीपू क्या बात है?" पपरी ने पूछा। "क्या तुम्हें कोई चिंता सता रही है? तुम बहुत दुखी और परेशान लग रहे हो?"

"हां, मैं दुखी हूं और उदासी महसूस कर रहा हूं", दीपू ने धीरे से स्वीकार करते हुए कहा।

"क्यों?" पपरी ने पूछा, "तुम्हें क्या परेशानी है?"

"वास्तव में कुछ भी नहीं," दीपू ने टालते हुए कहा। "मैं वैसे ही खिन्नता और उदासी महसूस कर रहा हूं।"

"लेकिन क्यों?" पपरी ने जोर देकर कहा। "सोनार बागान में कोई भी ऐसा महसूस नहीं कर रहा। उन सबसे अलग आज जैसे सुहावने दिन में तुम कैसे उदास हो?"

"मुझे नहीं पता", दीपू ने कहा। "मेरे विचार में मैं कुछ भी न करने से



उकता गया हूं।"

"कुछ भी न करने से" पपरी ने दोहराया, "लेकिन यहां बहुत कुछ है जो हम कर सकते हैं। हम लोग आज पिकनिक पर जा सकते हैं।"

लेकिन दीपू ने अपना सिर इंकार में हिला दिया। "मैं पिकनिकों से ऊब गया हूं, यहां अब और कुछ, ऐसा नहीं हो रहा है जिससे उत्साह पैदा हो।"

"मेरे विचार से मैं समझ सकता हूं कि तुम्हारी परेशानी क्या है," पपरी ने कहा। "मैंने देखा है कि जब से तुमने हैली साहब का हीरा ढूंढा है तुम पहले जैसे नहीं रहे। मेरे विचार से तुम और भी जोखिमपूर्ण कार्य करना चाहते हो। लेकिन ऐसी घटनाएं जीवन में एकाध बार ही होती हैं।"

"मेरी समझ से तुम ठीक ही कहते हो", दीपू ने सोचते हुए कहा। "तुम जानते हो, उसके बाद से मुझे जिज्ञासा हो रही है कि सोनार बागान से परे क्या है? मैं उन रोशनियों को लेकर अचंभित हूं जो इतनी दूर से पहाड़ियों पर चमक रही थीं। क्या तुम जानते हो वहां क्या है?"

"हां, सोनार बागान से परे एक बहुत विशाल संसार है?" पपरी ने समझाते हुए कहा। "वे पहाड़ियां और रोशनी वहां पर हैं जहां आदमी रहता है।"

"बहुत विशाल संसार, जहां आदमी रहता है", दीपू ने दोहराया और उसकी आंखें चमक उठीं। वो आवाज बहुत ही उत्तेजक थी। "उस विशाल संसार की यात्रा करना कितना सुखद होगा तथा आदमी से मिलना कितना आश्चर्यजनक! मैं समझ गया, मैं इसीलिए उदास हूं। मुझे आवश्यकता है जोखिम भरे कामों की और मैं यहां सोनार बागान में फंसा हुआ हूं।"

"मेरे मित्र, हम सोनार बागान में बहुत ही अच्छे हैं", पपरी ने गंभीर होकर कहा। "यह हमारा घर है और हमें यहीं रहना चाहिये। यहां से बाहर जाकर जोखिम तलाशना मूर्खता ही होगी।"

"मूर्खता क्यों?" दीपू ने पूछा। "वहां दूसरे संसार में जाने में क्या नुकसान है? वहां आदमी से मिलने में क्या नुकसान है?"

"बहुत से नुकसान हैं?" पपरी स्तब्ध होकर चिल्लाया। "वह विशाल संस[ार] एक डरावना स्थान है। वह समस्याओं से भरा हुआ है। ऐसी समस्याएं [जो] आदमी ने स्वयं पैदा की हैं। मैं और तुम जहां भी हैं बहुत अच्छे हैं।"

"तुम यह कैसे जानते हो?" दीपू ने पूछा। "तुमने तो कभी भी उस विशा[ल] संसार की यात्रा नहीं की, न ही तुम कभी आदमी के संपर्क में आये हो[।"]

"यह सच है", पपरी ने स्वीकार किया। "लेकिन मेरे अनेक भाई-बहन व[...]

पर हैं। हम बंदर आदमी को अच्छी तरह जानते हैं। इसीलिए हम उससे बहुत दूर रहने की कोशिश करते हैं। इसके अलावा तुम याद करो कि हैली साहब के दूत ने क्या कहा था। हैली साहब ने भी हीरे के लिए आदमी पर विश्वास नहीं किया था।"

"हां, हां मैं सब जानता हूं", दीपू ने संक्षेप में कहा। "लेकिन फिर भी मेरे विचार से तुम बात करने के लिए समर्थ नहीं हो। मुझे डा. औल का कहा हुआ याद आ रहा है कि आदमी तुमसे किसी न किसी तरह का संबंध रखता है . . . हां ऐसा ही है। डा. औल ने कहा था कि आदमी तुम्हारा ही वंशज है।"

"यह सही नहीं है", पपरी ने गुस्से से कहा। "मैं तुम्हें बता सकता हूं कि आदमी और हम में बहुत से अंतर हैं।"

"ठीक है, मुझे बताते जाओ, मैं सुन रहा हूं", दीपू ने कहा।

"ठीक है, तुम जानना चाहते हो तो मैं तुम्हें बताऊंगा", पपरी ने कहा जो अभी भी बहुत गुस्से में था। "ये अंतर इस गाने में बहुत अच्छी तरह बताये गये हैं जो कि हम बंद अक्सर गाते हैं। यह गाना इस प्रकार है—

गलत बात है, गलत बात है, है कलंक हम सबके लिए
मानव की नहीं जाति हमारी, अलग रहें हम सब के लिए
करता बहुत फरेब आदमी, बंदर जिससे करे घृणा
साजिश, व्यूह, युद्ध तक रचता; बंदर से वे करे घृणा
निर्दय और वाचाल वे लेकिन हम मरते हैं सबके लिए . . .

दीपू स्तब्ध था। "पपरी तुम्हारे कहने का तात्पर्य कहीं यह तो नहीं कि आदमी बहुत बुरा है", उसने चीख कर कहा।

पपरी उत्तर देने ही वाला था कि तभी पायल उड़ कर आ गया।

"दीपू! पपरी!" उसने उत्साह से कहा। "मेरे पास एक समाचार है, मैंने अभी अभी सोनार बागान में एक आदमी देखा है।"

"एक आदमी!" पपरी ने विस्मय से चिंतित होते हुए कहा। "तब तो यह बुरी खबर है। मुझे यह पसंद नहीं। आदमी जहां भी जाता है वहां मुसीबतें आ जाती हैं।"

"मुसीबत" पायल ने दोहराया, "क्या तुम यह कह रहे हो कि सारे आदमी बुरे होते हैं।"

"हां, वास्तव में वे बुरे होते हैं", पपरी ने दृढ़ता से कहा। "लेकिन आदमी

का जंगल में होने का अर्थ है कि पेड़ कटेंगे। मेरे विचार से जो आदमी तुमने देखा है वह लकड़हारा है। वह हमारे खूबसूरत सोनार बागान को नष्ट करने आया है। वह हमारे यहां के सभी पेड़ों को काट देगा।"

"हां ठीक है वह पेड़ ही काट रहा है", पायल ने कहा। "लेकिन वह सूखा हुआ पेड़ है। सूखे हुए पेड़ का हमारे लिए क्या उपयोग?"

"मैं मानता हूं कि किसी उपयोग का नहीं है", पपरी ने अनिच्छा से कहा। "लेकिन फिर भी, वह मुसीबत लेकर आया है इसका मुझे पूरा विश्वास है। सारे आदमी बुरे होते हैं।"

"क्षमा करना मैं तुम्हारी बात से सहमत नहीं हूं", पायल ने कहा। "कुछ आदमी अच्छे भी होते हैं। यह मैं अपने स्वयं के अनुभव से जानता हूं। मुझे नहीं लगता है कि पहले मैंने कभी तुम्हें बताया है कि एक बार मेरा आदमी से भी संबंध था। कोई भी दयालु हो सकता है। यद्यपि उसने मुझे पिंजरे में रखा था, लेकिन वह मेरी बहुत अच्छी तरह देखभाल करता था। वह मुझे बहुत ही स्वादिष्ट चीजें खाने को देता था। वह बहुत ही सज्जन और स्नेही था। मैं उसके साथ बहुत खुश था। लेकिन हाय! वो मर गया। उसकी पत्नी भी उतनी ही दयालु थी लेकिन वह मेरी देखभाल नहीं कर सकती थी, इसलिए उसने मुझे मुक्त कर दिया। मैं उड़ कर सोनार बागान आ गया और तब से यहीं पर हूं। नहीं, मेरे विचार में तुम्हारा यह कहना कि सभी आदमी बुरे होते हैं, गलत है। कुछ आदमी बुरे अवश्य होते हैं। लेकिन उस विशाल संसार में कुछ अच्छे आदमी भी हैं।"

दीपू इस वार्तालाप को चुपचाप सुन रहा था। वह मनुष्य के सोनार बागान में पहुंचने से काफी उत्तेजित था। लेकिन पपरी की बातों से परेशान भी था। पायल की बातों से, आदमी पर फिर से उसका विश्वास जम गया था।

वह बोल उठा, "तुम कहां हो पपरी! मेरे विचार से तुम आदमी के बारे में गलत सोचते हो। तुम सुनी-सुनाई कह रहे हो लेकिन पायल अपने अनुभव से कह रहा है।"

"पायल भाग्यशाली है, जो वह अच्छे आदमी के संपर्क में आया", पपरी ने उत्तर दिया। "मैं अभी भी कहूंगा, कि अधिकांश आदमी बुरे होते हैं।"

"अभी कुछ देर पहले तुम कह रहे थे कि सभी आदमी बुरे होते हैं", दीपू ने टोकते हुए कहा। "अब तुम कह रहे हो कि अधिकांश आदमी बुरे होते हैं। मैं वास्तव में समझ नहीं पा रहा हूं कि क्या सोचा जाये। मेरे विचार में

मुझे स्वयं छानबीन करनी चाहिए। पायल तुम मुझे वहां ले चलो जहां आदमी है। मैं देखना चाहता हूं कि वह कैसा लगता है।"

इससे पहले कि पायल बोलता पपरी ने हस्तक्षेप किया, "तुम पहले ही जानते हो कि आदमी कैसा लगता है। तुमने हैली साहब को देखा है।"

"हां मैंने देखा है", दीपू ने स्वीकार करते हुए कहा। "लेकिन हैली साहब तो किसी और लोक से थे। मैं इस लोक के आदमी को देखना चाहता हूं कि वह कैसा लगता है? अगर आवश्यकता पड़ी तो मैं इस लकड़हारे से मित्रता बढ़ाऊंगा।"

"भगवान के वास्ते ऐसा मत करो, दीपू!" पपरी सचेत करता हुआ चिल्लाया। "तुम समझ नहीं पा रहे कि तुम क्या कह रहे हो। मेरी सलाह मानो तो दूर रहो. . . पायल! इसके लिए तुम्हें दोषी माना जायेगा। क्योंकि तुम्हारी बेवकूफी से ही दीपू परेशानी में पड़ेगा।"

पायल चिल्लाया, "मैंने क्या कह दिया, मैंने तो अपना अनुभव ही बताया है और केवल सच ही तो कहा है।"

"सच!" पपरी रुआंसा होकर घृणा के स्वर में बोला। "यह तुम्हारा बेवकूफी भरा सच है। जिससे दीपू मुसीबत में फंसेगा।"

"मेरे विचार में दीपू अपनी देखभाल अपने आप कर सकता है", पायल ने समझदारी से कहा। "उसे क्या करना चाहिए, यह जानने समझने की उसकी उम्र है। यदि वह आदमी से मिलना चाहता है तो मैं नहीं समझता कि हमें उसे रोकना चाहिए। उसे अपने आप छानबीन करने दो। जैसाकि किसी ने कहा भी है अनुभव सबसे अच्छा शिक्षक है।"

दीपू ने अपने मित्र की आंखों में आंसू देखकर कहा, "हां, पपरी तुम्हें मेरे बारे में चिंता नहीं करनी चाहिए। मैं अपनी देखभाल आप कर सकता हूं। जहां तक मेरा सवाल है मुझे जोखिम चाहिए, मैं सोनार बागान में खुश नहीं हूं। मुझे आदमी से मिलने के लिए चलना चाहिए। मुझे स्वयं ही देखना चाहिए कि विशाल संसार कैसा है? उसके बाद ही मैं अपना भविष्य तय करूंगा।"

इससे यह बात यहीं समाप्त हो गयी। दीपू ने पपरी से विदा ली और पायल के साथ उस स्थान के लिये चल दिया जहां पर आदमी लकड़ी काट रहा था।



दीपू को मित्र मिला

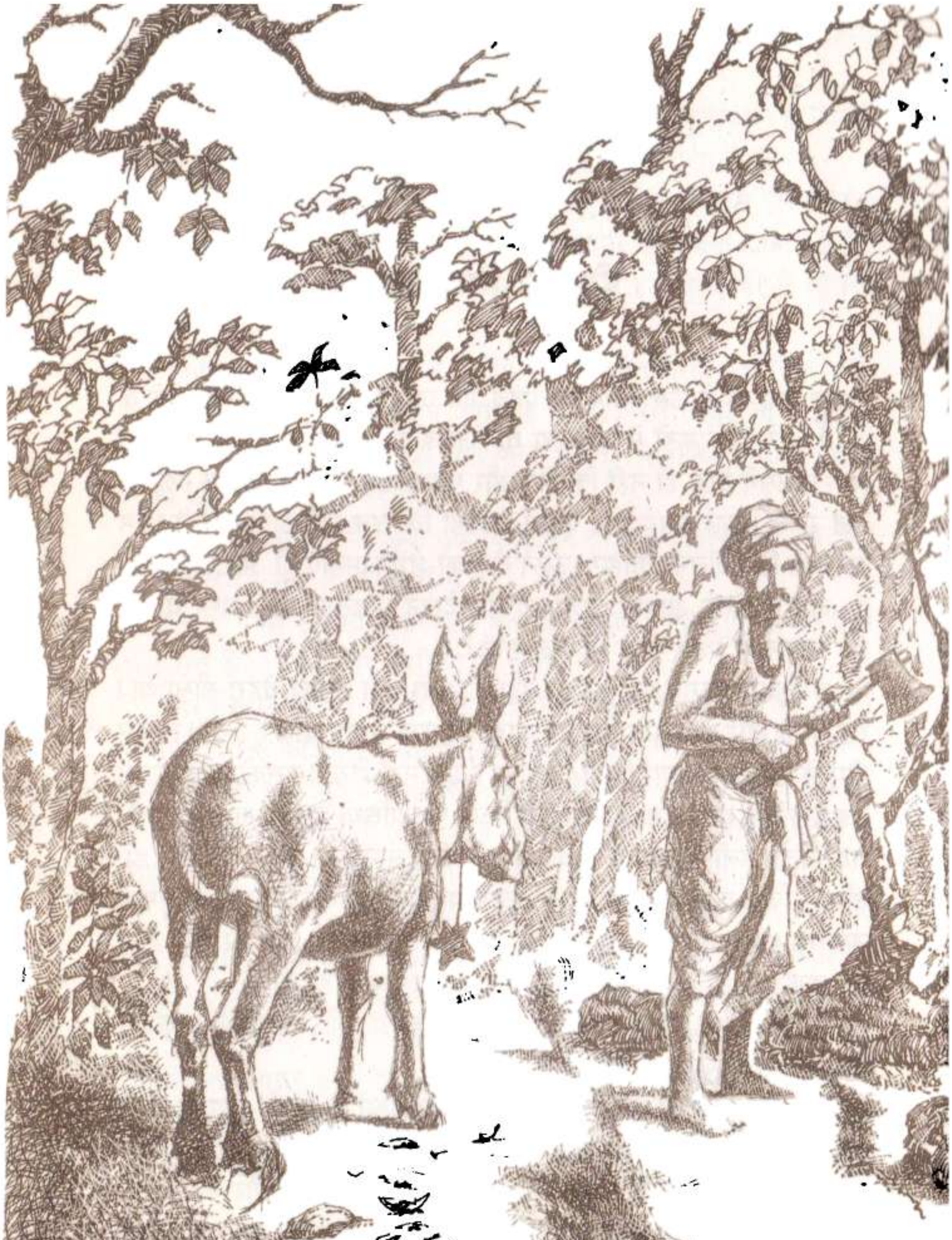
जल्दी ही वे उस स्थान पर पहुंच गये जहां पर लकड़हारा सूखे पेड़ के तने को टुकड़ों में काट रहा था। लकड़हारा अपने काम में इतना लीन था कि उसने देखा ही नहीं कि दीपू और पायल उसे पेड़ों के पीछे से छिपकर देख रहे हैं। कुछ समय बाद पायल ने कहा कि अब मुझे अन्य जरूरी काम करने के लिए चलना चाहिए। उसने दीपू को शुभकामनाएं दीं और उड़ गया।

दीपू पृथ्वी के आदमी को पहली बार देखने में इतना ध्यान मग्न था कि वह पायल से विदा लेना भी भूल गया।

लकड़हारा ठिगने कद का एवं हट्टा-कट्टा था तथा उसका चेहरा सौम्य था। वह धोती और बंडी तथा सिर पर पगड़ी की तरह कपड़ा बांधे हुए था। लेकिन दीपू ने उसकी इन बारीकियों की ओर ध्यान नहीं दिया। उसकी रुचि केवल यह देखने में थी कि वह सोनार बागान के पशु-पक्षियों से कितना अलग था। यद्यपि वह हैली साहब के साथ एक रूप में समान था। इसके बावजूद डा. औल ने क्या कहा था, आदमी वास्तव में पपरी और उसकी प्रजाति के समान नहीं था। दीपू अपने विचारों में इतना मग्न था कि उसे पता ही नहीं लगा कि कब वह धीरे-धीरे आदमी के पास पहुंचता जा रहा था।

इस बीच लकड़हारा लकड़ियां काटे जा रहा था और उसके पीछे लकड़ी का ढेर बढ़ता जा रहा था।

लकड़ी के ढेर को बढ़ता हुआ देखकर लकड़हारे ने अपने आप से कहा, "प्यारे! मैं कितना भाग्यशाली हूं जो मुझे सूखा हुआ पेड़ मिल गया। अगर प्रतिदिन मेरा भाग्य ऐसे ही खुल जाये तो मेरी पत्नी 'सुखी' और मेरे आराम से जीने के लिए पर्याप्त रहेगा। लेकिन. . ., उसने एक बार फिर से ढेर को निहारा और कहने लगा, मेरी कामना है कि इस सारी लकड़ी को ढोने के लिए



मेरे पास एक छोटा-सा गधा होता। इतने भारी गट्ठर को अपने सिर पर उठा कर घर तक ले जाना बहुत कठिन होगा।" उसने ठंडी सांस ली, और सरसरी दृष्टि डाली तो चित्तीदार दीपू उसके सामने खड़ा हुआ था। "वाह!" लकड़हारा विस्मय से बोल उठा, "मैं तो अभी कामना ही कर रहा था कि इस लकड़ी को उठाने के लिए एक छोटा-सा गधा होता और यहां ठीक मेरे सामने एक गधा आ गया! लेकिन, कितना विलक्षण गधा है। इसके गले में तो जंजीर और उसमें डला चांदी का सितारा भी है।"

वह दीपू के पास आया और मीठे स्वर में पूछा, "प्यारे गधे, तुम्हारा नाम क्या है?"

"दीपू" दीपू ने शरमाते हुए उत्तर दिया, वह खुश था कि आदमी ने उससे बात की, "और, तुम्हारा नाम क्या है?"

"मेरा नाम मंगल है", लकड़हारे ने उत्तर दिया। "तुमसे मिलकर खुशी हुई दीपू, तुमने इतना मनोहारी सितारा अपनी गर्दन में क्यों पहन रखा है?"

"यह प्रेम का सितारा है", दीपू ने बताया। "हैली साहब ने अपना बहुमूल्य हीरा ढूंढने के बदले मुझे यह भेंट किया था। आप को पता होगा कि हीरा हैली धूमकेतु से गिर गया था। यदि यह नहीं मिलता तो धूमकेतु अपनी पूंछ खो देता। वह बहुत गंभीर मामला होता। हैली साहब ने मुझसे हीरा ढूंढने के लिए कहा था।"

"अच्छा, अच्छा, कितना रोचक है।" मंगल ने थोड़ा परेशान होते हुए कहा, क्योंकि उसने हैली साहब का या हैली धूमकेतु का इस संदर्भ में कभी नाम नहीं सुना था। वह कहता गया, "दीपू, मुझे तुम्हारी सहायता की आवश्यकता है। क्या तुम मेरे लिए इस लकड़ी को मेरे गांव तक उठा कर ले चलोगे? वह यहां से काफी दूर है, लेकिन मैं समझता हूं कि तुम इसे कर ही लोगे।"

दीपू ने कहा, "मैं तुम्हारी लकड़ी अवश्य ले चलूंगा, लेकिन मुझे बताओ कि क्या तुम्हारा गांव उन पहाड़ियों के पीछे है?"

"हां, वहीं है", मंगल ने दोहराते हुए कहा।

"यह वही जगह है न, जहां बहुत विशाल संसार है!" दीपू ने उत्सुकता से पूछा। "मै वहीं जाना चाहता हूं, जहां आदमी रहता है। मैं उसी जगह जाना चाहता हूं।"

"ठीक है, मैं तुम्हें वहां ले चलूंगा", मंगल ने हंसते हुए कहा। "मेरे गांव में बहुत-से लोग रहते हैं। वे उसी विशाल संसार का एक भाग हैं, समझे!"

"यह तो बहुत अच्छी बात है", दीपू ने चिल्ला कर कहा। "तब तो हम लोग मित्र हो गये। क्या मैं तुम्हारे साथ रह सकता हूं?"

"अवश्य ही", मंगल ने खुश होते हुए कहा क्योंकि उसे लकड़ी ढोने के लिए एक गधा जो मिल गया था।

उसने लकड़ी के गट्ठर को दीपू की पीठ पर लादा और दीपू की गर्दन से एक रस्सी के साथ बांध दिया। फिर वह उसे सोनार बागान से विशाल संसार की ओर हांक कर ले चला।





दीपू का नया घर

जल्दी ही सोनार बागान बहुत पीछे छूट गया। दीपू और मंगल ने विशाल घास के मैदान को पार किया जहां छाया देने के लिए कोई भी पेड़ नहीं था। वहां काफी गर्मी थी और दीपू को पसीना आना और प्यास लगनी शुरू हो गयी।

"मंगल, मैं पानी पीने के बाद ही चल सकता हूं", उसने अंततः कह ही दिया।

"मेरे साथ भी ऐसा ही है", मंगल ने उत्तर दिया और वह उसे लेकर पास के ही झरने की तरफ चल पड़ा, जहां उन दोनों ने अपनी प्यास बुझायी। उन्होंने राहत अनुभव की और अपनी यात्रा जारी रखते हुए पहाड़ी पर पहुंच गये। पहाड़ी की चढ़ाई काफी खड़ी थी और जैसे-जैसे वे चढ़ाई चढ़ते गये दीपू की सांस उखड़ने लगी, और उसे पीठ पर लदा भार बहुत भारी लगने लगा। मंगल ने देखा कि वह परेशानी अनुभव कर रहा है।

"दीपू चिंता मत करो, हम शीघ्र ही चोटी पर पहुंच जायेंगे", उसने सहलाते हुए कहा। "दूसरी ओर नीचे उतरने में बहुत आसानी होगी। मेरा गांव पहाड़ी की तलहटी में घाटी के नीचे है। हम लोग जल्दी ही घर पहुंच जायेंगे।" वे पहाड़ी की चोटी पर पहुंच गये। दूसरी ओर नीचे उतरना आसान था, इसलिए वे तेजी से उतर गये। अंततः वे घाटी में पहुंच गये जहां मंगल का गांव था।

दीपू मिट्टी के बने मकानों और उन पर फूस की छतें देखकर रोमांचित हो उठा। 'तो यह है आदमियों की दुनिया', उसने बहुत उत्तेजित होते हुए सोचा। उसने देखा कि मंगल की तरह ही बहुत-से आदमी वहां घूम रहे थे।

अंत में जब वे छोटे से मकान के सामने रुके सूरज डूब रहा था। अन्य घरों की तरह ही यह भी मिट्टी का बना हुआ था तथा इसकी छत भी खपरैल

की थी। इसमें सामने की ओर छोटा-सा बगीचा था जिसमें विभिन्न प्रकार की सब्जियां उगी हुई थीं। यह देखते ही दीपू के मुंह में पानी भर आया और पेट में भूख से चूहे कूदने लगे। वह कुछ खाने के लिए मांगना चाहता था लेकिन उसने सोचा कि यह अशिष्टता होगी।

मंगल ने सामने का दरवाजा खटखटाया तो किसी ने दरवाजा खोला—वह आदमी की ही प्रजाति का था, लेकिन उसकी वेशभूषा मंगल से अलग थी।

"यह मेरी पत्नी 'सुखी' है", मंगल ने दीपू से कहा। फिर दीपू का अपनी पत्नी से परिचय कराते हुए कहा, "सुखी, मेरे मित्र दीपू से मिलो, हम लोग आज जंगल में उस समय मिले, जब मैं लकड़ियां काट रहा था। मैं लकड़ी उठाने के लिए एक छोटे-से गधे की कामना कर ही रहा था कि अचानक देखा मेरे सामने दीपू खड़ा था। हम लोग फौरन मित्र बन गये और दीपू यहां आने और हमारे साथ रहने को तैयार हो गया। अब हमारे पास अपना छोटा-सा गधा लकड़ी ढोने के लिए हो गया। यह बहुत अच्छा हुआ न!"

"वास्तव में यह बहुत अच्छा हुआ", सुखी ने कहा। "हमारे घर में तुम्हारा स्वागत है दीपू!" कहते हुए उसने अपनी बांहें दीपू के गले में डाल दीं और उसके माथे को चूम लिया।

दीपू चुंबन से शरमा गया। लेकिन उसे अच्छा लगा। उसे सुखी भी अच्छी लगी। उसे उसका सौम्य मुखड़ा, उसकी लंबी नीली सुंदर-सी स्कर्ट, गुलाबी ब्लाऊज (कुरता), तथा सिर पर और कंधों पर पड़ा हुआ सफेद कपड़ा बहुत पसंद आया। उसे उसके गले में पड़ी हुई चमकदार मनकों की माला और कलाइयों में बहुरंगी कड़े भी बहुत पसंद आये।

मंगल ने दीपू की पीठ से लकड़ियों का बोझ उतार दिया और उसे बाग के कोने में एक छोटे-से छप्पर की ओर ले गया। यहां पर ताजी घास का बिछौना, रसीली गाजरों का ढेर और स्वच्छ पानी की भरी हुई बाल्टी रखी थी।

"आओ , दीपू!" मंगल ने कहा। "तुम अवश्य थक गये होंगे। यह तुम्हारे भोजन का समय है। उसके बाद तुम्हें सो जाना चाहिए। कल का दिन हमारा काफी व्यस्त है। हमें कल गांव के मेले में चलना होगा। मुझे अपनी लकड़ियां बेचनी होंगी। जिससे मैं अपने सबके लिए भोजन की सामग्री खरीद सकूंगा।"

उसने दीपू को शुभरात्रि कहा और बाहर निकल कर दरवाजा बंद कर दिया। दीपू ने जाकर फौरन रसीली गाजरों को खाना शुरू कर दिया। अपना पेट भरने



के बाद उसने पानी पिया. . .। उसके बाद वह संतुष्ट होकर ताजी घास के बिछौने पर लेट गया। वह प्रसन्न था क्योंकि उसे मानव प्रजाति के दयालु मित्र मिल गये थे।

उसने सोचा कि वह उतना ही भाग्यशाली है जितना आदमी के साथ रहता हुआ पायल था। 'मेरे अंदाज से पपरी गलत था', दीपू ने नींद को भगाते हुए सोचा। 'पपरी को इस समय मुझे देखना चाहिए। मुझे आश्चर्य हो रहा है कि क्या कहा था उसने। सचमुच मैं आश्चर्यचकित हूं कि वह पायल और अन्य सारे इस समय सोनार बागान में क्या कर रहे होंगे।'

वह जल्दी ही अपने नये जीवन, नये मित्र तथा अगले दिन गांव के मेले के बारे में सपने लेता हुआ गहरी नींद सो गया।





गांव का मेला

जब अगले दिन सुबह दीपू जागा तो उस समय सूर्य उसके छोटे-से छप्पर की खिड़की से झांक रहा था। वह कूदने लगा और उसने अपनी आंखें आश्चर्य से मिचमिचायीं कि वह कहां है? सबसे पहले उसने सोचा कि वह सोनार बागान में है। तब उसे याद आया कि वह तो विशाल संसार में है और आदमी के साथ रह रहा है। इस विचार से वह रोमांचित हो गया।

जल्दी ही मंगल छप्पर में आया। वह साथ में ताजी, रसीली गाजरें और साफ पानी की एक और बाल्टी लाया था।

"शुभ प्रभात, दीपू!" उसने चहक कर कहा। "यह तुम्हारे नाश्ते का समय है। उसके पश्चात हमें गांव के मेले में जाने के लिए तैयार हो जाना चाहिये। आगे का दिन हमारा बहुत ही व्यस्त है।" दीपू ने गाजरें खाकर पानी पी लिया। मंगल तब उसे छप्पर से बाहर ले आया और उसकी पीठ पर लकड़ियां लाद दीं। मंगल ने दीपू की गर्दन के चारों ओर रस्सी बांध दी और चलने के लिए तैयार हो गया। तभी सुखी वहां पहुंच गयी और उसने मंगल को खाने का डिब्बा पकड़ाते हुए कहा, "यह तुम्हारा दोपहर का खाना है इसमें कुछ गाजरें दीपू के लिए भी रख दी हैं।"

शीघ्र ही वे गांव के उस मैदान की ओर चल दिये जहां मेला लगना था। दीपू काफी उत्साहित था। वह अपने आप को वहां पहुंचने से मुश्किल से रोक पा रहा था। जिस रास्ते से वे निकले वहां रास्ते में विशाल पत्थरों से बना एक घर था जिसके चारों ओर ऊंची दीवार बनी हुई थी। उसके दरवाजे पर दो वर्दीधारी संतरी खड़े थे, उनकी पीठ पर तीर कमान बंधे थे।

"यह किसका घर है?" दीपू ने पूछा, "और दरवाजे पर खड़े ये आदमी कौन हैं?"

"यह जमींदार का मकान है", मंगल ने बताया। "यह यहां का सबसे धनी आदमी है। अधिकतर गांव इसी के हैं। ये आदमी इसके पहरेदार हैं। ये इसके घर की रक्षा करते हैं। इसमें किसी को प्रवेश की अनुमति नहीं है। यदि कोई प्रयत्न भी करता है तो इसके ये पहरेदार उसे अपने तीर कमान से मार गिराते हैं।"

"कितना दुखद है!" दीपू को आघात लगा और उसे पपरी के शब्द याद आ गये कि आदमी एक दूसरे को मारते रहते हैं। "इतना सुंदर घर होने का क्या लाभ यदि उसमें किसी को प्रवेश करने की अनुमति ही नहीं है? जमींदार अवश्य ही कोई डरावना आदमी होगा।"

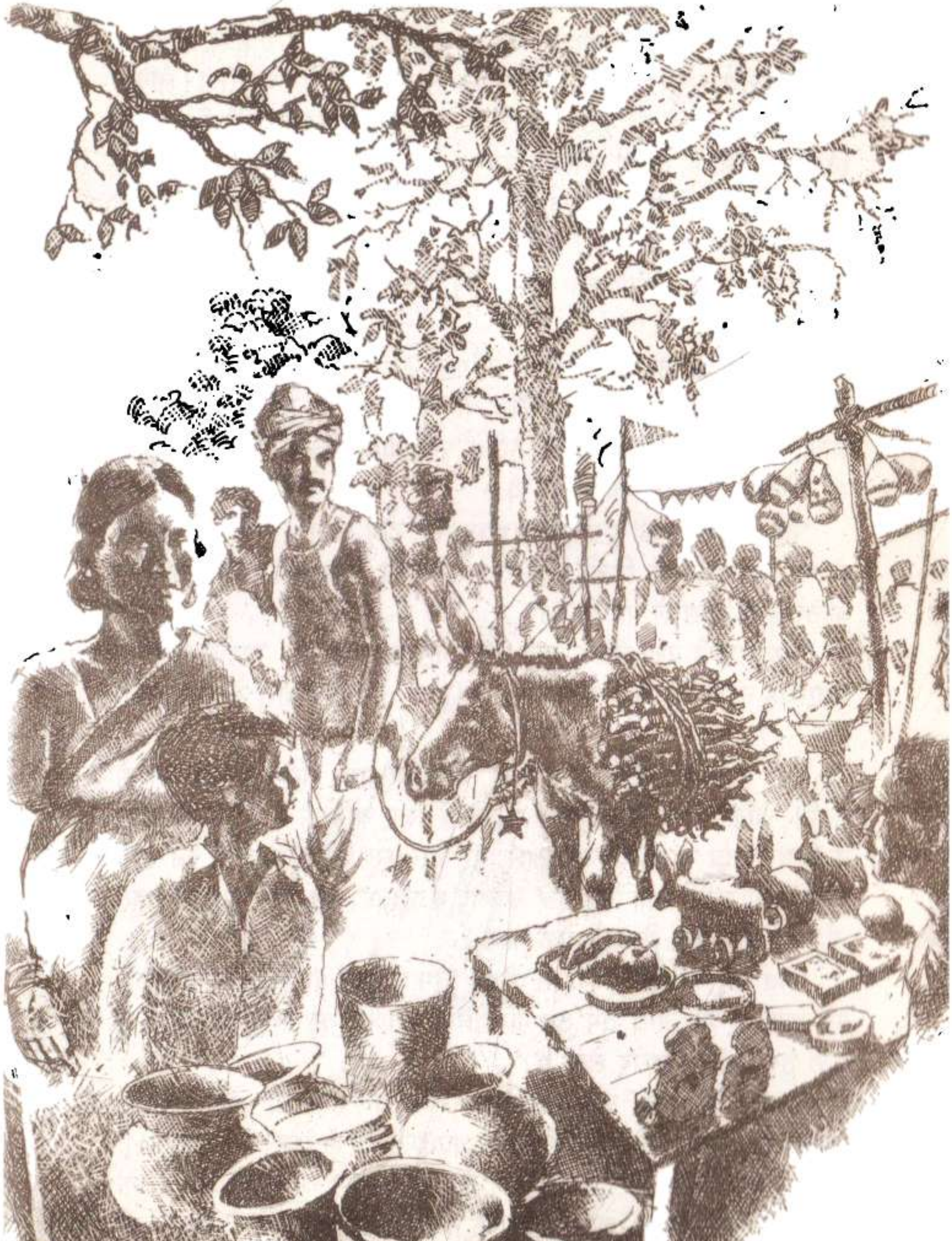
"वह उतना बुरा नहीं है", दीपू को इतना सदमा लगा है यह देखकर मंगल ने हंसते हुए कहा। "जमींदार तो वास्तव में काफी भला है। उसकी लड़की बहुत ही निर्दयी है। वह बिगड़ैल, स्वार्थी तथा बहुत ही क्रूर है। उससे हरेक आदमी डरता है। उसका नाम सुंदरी है लेकिन हम सभी उसे राजकुमारी कह कर बुलाते हैं क्योंकि वह ऐसा ही चाहती है। प्रत्येक उससे दूर ही रहने की कोशिश करता है क्योंकि कोई नहीं जानता वह कब किसी को क्या हानि पहुंचा दे।"

"काश, मेरी उससे कभी मुलाकात न हो", दीपू ने सचेत होते हुए कहा। "वह अवश्य ही बहुत बुरी होगी।"

"वह वास्तव में बहुत बुरी है", मंगल ने कहा। "लेकिन चलो प्रसन्न हो जाओ दीपू! हम लोग गांव के मेले में पहुंच चुके हैं।"

गांव के मेले में बहुत भीड़ थी। वहां लोगों के बहुत-से झुंड थे तथा बहुत-सी अच्छी अच्छी चीजें बिक्री के लिए थीं। वहां पर फल और सब्जियां, चावल और मसाले, खाना बनाने के तथा अन्य बर्तन थे। वहां पर बहुत ही सुंदर रंग-बिरंगी चूड़ियां और रिबन, कर्णफूल, गले के हार और इससे भी अधिक बहुत कुछ था।

दीपू ने चारों ओर बड़े चाव से देखा। दूकानदार तेजी से व्यापार कर रहे थे। मंगल ने भी विक्रेताओं के बीच अपनी जगह ले ली। उसने दीपू की पीठ पर लदी लकड़ियां उतार लीं तथा उन्हें अपने सामने जमीन पर खोलकर बिछा दिया। कुछ ही मिनटों में कई लोग लकड़ियों का मोल-भाव करने लगे और कुछ समय में ही मंगल की सारी लकड़ियां बिक गयीं। मंगल बहुत प्रसन्न था।



"अब हम लोग वे सारी चीजें खरीद सकते हैं, दीपू! जिनकी हमें आवश्यकता है", उसने कहा और वे चल दिये। उन्होंने चावल और मसाले, एक खाना बनाने का बर्तन तथा सुखी के बालों के लिए एक लाल रंग का रिबन खरीदा। लेकिन मंगल के पास अभी भी कुछ पैसे बच गये थे। "आज का दिन मेरे लिए बहुत ही भाग्यशाली है, दीपू!" मंगल ने प्रसन्न होकर कहा। "मुझे पूरा विश्वास है कि यह भाग्योदय तुम्हारी वजह से ही हुआ है, मित्र, मैं किस प्रकार तुम्हें धन्यवाद दूं?"

"इसकी कोई आवश्यकता नहीं", दीपू ने शरमाते हुए कहा। "मैं आभारी हूं . . ."

वह अचानक, उस क्षण खामोश हो गया जब उसने देखा कि एक आदमी कंधों पर बांस लटकाए हुए है, जिस पर पक्षियों से भरे हुए तारों के पिंजरे लटक रहे थे। पिंजरे बुरी तरह भरे हुए थे, पक्षी बाहर निकलने के लिए छटपटा रहे थे और दहशत से चीख रहे थे।

"यह आदमी पृथ्वी पर क्या कर रहा है", दीपू चीखा। "वे पक्षी अवश्य ही मर जायेंगे। उनके हिलने के लिए जरा-सी भी जगह नहीं है और वे बहुत कठिनाई से सांस ले पा रहे हैं।"

"यह आदमी पक्षी बेचने वाला है", मंगल ने समझाया। "घर ले जाने के लिए यह लोगों को पक्षी बेचता है। वहां इन्हें तार के पिंजरों में रखा जाता है।"

"तार के पिंजरों में रखा जाता है", दीपू चिल्लाया, वह बहुत परेशान हो गया। "लेकिन पक्षी पिंजरों में बंद रहने के लिए थोड़े ही हैं। उन्हें तो उड़ने के लिए स्वतंत्र रहना चाहिए। काश, मेरे पास कुछ पैसे होते! तो मैं इन सभी पक्षियों को खरीद लेता और इन्हें आजाद कर देता", यह कहते हुए वह बहुत मुश्किल से अपनी सिसकी रोक पाया।

"अब दीपू!" मंगल ने स्नेह से कहा। "तुम परेशान मत हो। मेरे पास कुछ पैसे बचे हुए हैं। अगर तुम उन पक्षियों को आजाद करना चाहते हो तो मैं उन्हें तुम्हारे लिए खरीद लेता हूं।"

"क्या वाकई मंगल? क्या तुम वास्तव में ऐसा कर सकते हो", दीपू ने फौरन चहकते हुए कहा। "तुम बहुत भले हो। शायद संसार के सबसे भले आदमी।"

"आओ, आओ", मंगल ने प्रसन्न होते हुए कहा। "मुझे विश्वास है कि मुझसे भी भले लोग हैं। लेकिन जैसाकि मैंने कहा मैं तुम्हारे लिए उन पक्षियों

को खरीदूंगा।" उसने जल्दी से पक्षी बेचने वाले को बुलाया और पूछा कि उन सभी पक्षियों का वह क्या लेगा?

"सभी पक्षियों का?" आदमी ने आश्चर्य से पूछा।

उसने उनका मूल्य बताया और मंगल उस पर राजी हो गया। उसने उस आदमी को पक्षियों का मूल्य चुकाया और दीपू को पिंजरे सौंप दिये। वह फटी हुई आंखों से सब देख रहा था। उसने पिंजरों को खोल दिया और सभी पक्षियों को आकाश में उड़ा दिया। पक्षी प्रसन्न हो कर चहचहाते हुए उड़ गये। केवल एक पक्षी "धन्यवाद" देने के लिए रुका रहा। वह बैंगनी रंग की छोटी-सी शकरखोरा थी। वह दीपू के सिर के पास आयी और उसके कानों में फुसफुसायी, "मित्र, मेरा नाम कुलार है। मैं तुम्हारा किस प्रकार आभार प्रकट करूं। मैं तुम्हारी सहृदयता कभी नहीं भुला पाऊंगी। यदि तुम कभी भी मुसीबत में होंगे तो मैं आकर तुम्हारी मदद करूंगी।" यह कहकर वह उड़ गयी।





दीपू मुसीबत में

दीपू बहुत प्रसन्न था कि उसने पक्षियों को नया जीवन दे दिया। वह अभी मंगल का आभार प्रकट करने ही जा रहा था कि चारों तरफ से चिल्लाने की आवाजें आने लगीं, "भागो, भागो, राजकुमारी आ रही हैं, राजकुमारी आ रही हैं।" लोग सभी दिशाओं में तितर बितर हो गये।

"राजकुमारी! दीपू आओ हमें फौरन चल देना चाहिए", मंगल ने दीपू को शीघ्रता से आगे बढ़ाते हुए कहा। लेकिन दीपू चलने में धीमा था। शीघ्र ही पूरा मैदान खाली हो गया और केवल दीपू तथा मंगल ही बचे रह गये।

तभी राजकुमारी अपने तीर कमानों से लैस दो पहरेदारों के साथ वहां आयी।

ज्यों-ज्यों राजकुमारी पास आती गयी, मंगल और भी भयभीत होता गया लेकिन दीपू वहीं खड़ा होकर आश्चर्य से उसे देखने लगा। इससे पहले उसने कभी राजकुमारी जैसा आदमी नहीं देखा था। राजकुमारी लंबी और गोरी थी, उसका चेहरा सौम्य था, आंखें काली और उसके काले घने बाल घुटनों तक पहुंच रहे थे। वह रेशम और साटन के कपड़ों से ढकी हुई थी और बहुमूल्य जवाहरात गले में, कलाइयों एवं उंगलियों में झिलमिला रहे थे।

राजकुमारी की नजर अचानक दीपू पर गयी। "कितना सुंदर गधा है", उसने विस्मय से दीपू के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा। "वाह! गधे मैंने तुम्हें पसंद कर लिया! मैं तुम्हें अपना पालतू जानवर बनाना चाहती हूं। मैं तुम्हें घर ले जाना चाहती हूं। मैं तुम्हें सोने के लिए साटन का बिछौना दूंगी।

मैं तुम्हें खाने के लिए सबसे लंबी रसीली गाजरें दूंगी जो तुमने पहले कभी नहीं खायी होंगी। तुम्हें कोई काम भी नहीं करना होगा। तुम मेरे मित्र होंगे, बस, मुझे जंगल की सैर के लिए तुम्हें ले जाना होगा। आओ, प्यारे गधे, क्या तुम मेरे बनोगे?"



दीपू तो, जैसे गूंगा हो गया था। वह तो केवल राजकुमारी को आश्चर्य से देखे जा रहा था। राजकुमारी अपना धैर्य और आपा खो रही थी तथा अब उसे गुस्सा आने लगा था। "गधे, तुम उत्तर क्यों नहीं दे रहे?" उसने तीखी आवाज में पूछा। उसने चारों तरफ देखा और कहा, "यह गधा किसका है? मुझे फौरन बताओ।" मंगल ने सिर से पैर तक कांपते हुए आगे कदम बढ़ाये। "ओ महान राजकुमारी" उसने कहा, "यह मेरा गधा है।"

"मैं तुम्हारे गधे को खरीदना चाहती हूं", राजकुमारी ने कहा। "तुम इसकी कितनी कीमत चाहते हो? मैं इसका बहुत अच्छा दाम दूंगी। मैं इसके बदले सोना दूंगी।" मंगल ने अपना सिर हिला कर मना कर दिया। "अच्छी राजकुमारी, मैं अपना गधा नहीं बेच सकता। यह मेरा मित्र है। मैं इसके बिना कुछ नहीं कर सकता।"

"इसे नहीं बेच सकते", राजकुमारी ने ठहाका लगाते हुए कहा। "तुमने मना करने की हिम्मत कैसे की? मैं इस गधे को खरीदना चाहती हूं। तुम्हें इसे बेचना ही होगा। मैं तुम्हें सोना दूंगी, सोना, समझे! तुम समझ गये न! सोने से अच्छा और क्या हो सकता है?"

"मैं समझ गया राजकुमारी", मंगल ने दबी आवाज में दोहराते हुए कहा। "लेकिन मैं इसे नहीं बेच सकता। यह मेरा मित्र है। मैं अपने मित्र को संसार का पूरा सोना मिलने पर भी नहीं बेच सकता।"

राजकुमारी को यह सुनकर बहुत आश्चर्य हो रहा था। वह हमेशा सोचती थी कि सोने से कुछ भी खरीदा जा सकता है। लेकिन यहां पर यह आदमी अपनी मित्रता के बदले सोना लेने से इंकार कर रहा था। वह कुछ क्षण के लिए अवाक् रह गयी, तभी फिर चिल्लाते हुए बोली, "तुमने मना करने की हिम्मत कैसे की? क्या तुम जानते हो किस से बात कर रहे हो? मैं जमींदार की लड़की हूं। यह गांव और इसकी हरेक चीज मेरे पिताजी की और मेरी है। तो इस गधे को किसी भी तरह मैं ही लूंगी। यह वैसे भी मेरा ही है, अधिकार से भी।" उसने अपने पहरेदारों की ओर घूमकर दीपू को पकड़ने का आदेश दिया।

पहरेदारों नें फौरन दीपू को कब्जे में लिया और उसे दूर ले जाने लगे। राजकुमारी वहां से चली गयी। बेचारा मगल दीपू को छोड़ने की प्रार्थना करते हुए राजकुमारी के पीछे जाने लगा। उसे रोता देखकर, दीपू जल्दी से उसे पुचकारते हुए फुसफुसाया, "चिंता मत करो, मंगल! मैं भागने की कोशिश

करूंगा। तुम जल्दी से सोनार बागान चले जाओ। वहां मेरे मित्र पपरी बंदर और हरी टिड्डे से मिलकर उन्हें सारी बात बताना। उनसे कहना कि वे औरों को भी बता दें तथा उनसे मेरी सहायता करने के लिए कहना। उनसे कहना . . .।"

वह अचानक बोलते हुए रुक गया क्योंकि अब उसकी आवाज वहां तक सुनाई नहीं देती।

मंगल दीपू और उसे पकड़कर ले जाने वालों को तब तक देखता रहा जब तक वे आंख से ओझल नहीं हो गये। तब भारी मन से, मंगल ने अपने कदम सोनार बागान की ओर वह सब करने के लिए बढ़ाये जिसके लिए उसके गधे मित्र ने उससे प्रार्थना की थी।





बचाव के लिए मित्र

अगली सुबह राजकुमारी ने तय किया कि वह पास के जंगल में सवारी के लिए जायेगी। वह दीपू की पीठ पर बैठ गयी, एक संतरी उसके पीछे हो लिया और वे लोग चल पड़े। पूरी यात्रा के दौरान दीपू से बात करने और मित्रता करने की कोशिश राजकुमारी करती रही, लेकिन दीपू मंगल से अलग हो जाने से इतना दुखी था कि वह चुप और उदास ही रहा।

जंगल तक पहुंचते-पहुंचते राजकुमारी दीपू से नाराज हो गयी।

"जब मैंने तुम्हें अपने पास रखने का फैसला किया था तो सोचा था कि तुम एक विशिष्ट गधे हो", उसने गुस्से से कहा। "अब मैं देख रही हूं कि तुम तो निरे बेवकूफ हो। तुम ऐसे ही बेवकूफ हो जैसाकि तुम्हारा मालिक लकड़हारा ..., अरे, कुछ तो बोलो, नहीं तो मैं तुम्हें सजा दूंगी।"

धमकी के बावजूद दीपू चुप रहा।

"बस बहुत हुआ", राजकुमारी ने गुस्सा होकर कहा। "संतरी, इस गधे को रोको और मुझे इसकी पीठ से उतारो। मैं जंगल में घूमने जाऊंगी। मुझे विश्वास है कि इस बेवकूफ और गूंगे गधे की सवारी करने से ज्यादा मजा घूमने में आयेगा।"

संतरी ने दीपू को रोका और उसकी पीठ से उतरने में राजकुमारी की सहायता की।

"इसे पेड़ से बांध दो", राजकुमारी ने आदेश दिया और वह जंगल में घूमने चल दी। संतरी ने दीपू को बांध दिया और राजकुमारी के पीछे उसकी सुरक्षा के लिए चलने लगा।

जब वे घूम रहे थे तो एक सुंदर, छोटी-सी बैंगनी रंग की शकरखोरा राजकुमारी का पीछा करते हुए उड़ने लगी।

"राजकुमारी!" शकरखोरा ने कहा, "तुम इतनी सुंदर, दयालु लड़की हो। इस जंगल में तुम्हारे लिए कोई स्थान नहीं है। यह जंगल बहुत खतरनाक है। तुम यहां क्या कर रही हो?"

"मैं घूमने जा रही हूं", राजकुमारी ने कहा। "मैं डरती नहीं। मेरे पास मेरी रक्षा के लिये मेरा संतरी है।"

शकरखोरा ने मना करते हुए अपना सिर हिलाया।

"मेरे विचार से तुम और तुम्हारा संतरी दोनों खतरे में हो", उसने कहा। "चूंकि तुम्हारा संतरी रास्ता नहीं जानता, इसलिए तुम दोनों परेशानी में पड़ सकते हो।"

"परेशानी! किस तरह की परेशानी?" राजकुमारी ने पूछा।

"ठीक है यदि तुम रास्ता नहीं जानते तो तुम ऐसे किसी गड्ढे में गिर सकते हो जो तुम्हारे पिताजी ने हाथियों को पकड़ने के लिए खुदवा रखे हैं।"

राजकुमारी ने कहा, "ओ प्यारी शकरखोरा! तब तो हमें सचेत रहना होगा।"

शकरखोरा ने कहा, "मैं तुम्हें रास्ता दिखाऊंगी। मैं कोशिश करूंगी कि तुम्हें कोई हानि न पहुंचे।"

"यह तुम्हारी बड़ी मेहरबानी होगी", राजकुमारी ने कृतज्ञतापूर्वक कहा।

वे अभी थोड़ी दूर भी नहीं गये थे कि तभी राजकुमारी और उसका संतरी हाथियों के लिए बनाये हुए गड्ढे में धड़ाम से गिर गये।

"बचाओ, बचाओ", राजकुमारी डर के मारे चिल्लाने लगी। "संतरी! मुझे यहां से बाहर निकालो, फौरन बाहर निकालो।"

लेकिन संतरी उसे विवशता से देखता रहा। आखिरकार वह शकरखोरा की तरफ मुड़ी जो पास के ही एक पेड़ की टहनी पर बैठी थी।

"तुमने हमसे रास्ता दिखाने का वादा किया था", उसने आरोप लगाते हुए कहा। "लेकिन चूंकि तुम्हारे कारण से ही हम गड्ढे में गिरे हैं. . . अतः तुम फौरन सहायता की व्यवस्था करो। मेरे पिताजी से कहो कि हमें इस गड्ढे से बाहर निकालने के लिए कुछ संतरी भेजें।"

लेकिन शकरखोरा ने इंकार में अपना सिर हिलाया। "राजकुमारी, यह तो तुम्हें सजा दी गयी है", उसने कहा। "यह कोई दुर्घटना नहीं थी। मैं तुम्हें जानबूझकर यहां लायी थी। मेरा नाम कुलार है। तुमने मेरे मित्र के साथ, जिसने मेरी जान बचायी थी, काफी निर्दयतापूर्ण व्यवहार किया है। तुम उसे उसके मित्र मंगल से दूर ले गयीं और उसे कैदी बना लिया। तुम्हें यह सजा मिलनी



ही चाहिए।"

"हां, राजकुमारी" गड्ढे के दूसरे किनारे से एक और आवाज आयी, "मैं मोटू हाथी हूं और मैं भी दीपू का मित्र हूं। तुम्हारे पिताजी ने मेरे जैसे हाथियों को पकड़ने के लिए ही यह गड्ढा बनवाया था। तुम्हें भी अपने किये का मजा चखना चाहिये।"

"हां, हां", ऊपर से दूसरी आवाज ने कहा। "तुम इसी सजा की अधिकारी हो। मैं पपरी बंदर हूं और मैं यहां अपने मित्र दीपू की सहायता के लिए ही आया हूं। दरअसल दीपू के सभी मित्र यहां पर उसकी सहायता के लिए आये हैं।"

राजकुमारी ने ऊपर देखा तो मेंढक, टिड्डा, खरगोश, तोता और लोमड़ उसे कौतुहल से नीचे टकटकी लगाये देख रहे थे। स्वाभाविक था कि ये बुला, हरी, बंटी, पायल और चालू थे। ये सभी मंगल का संदेश मिलने के बाद दीपू की सहायता के लिए आये थे।

राजकुमारी को अपने ऊपर गुस्सा आ रहा था। वह अपने पैर पटक रही थी और झुंझला रही थी।

"तुम्हारी इतनी हिम्मत, तुम्हारी इतनी हिम्मत", वह गुस्से से चीखी। "मैं तुम सबको सजा दूंगी। जरा मेरे पिताजी को इसका पता लग जाने दो, वे तुम सबकी अच्छी तरह मरम्मत करेंगे।"

"तुम्हारे पिताजी को इस बारे में जल्दी पता नहीं लग पायेगा", हरी ने बहादुरी से कहा। "हम लोग तुम्हें यहां भूखा मरने के लिए छोड़ जायेंगें। जब तक तुम्हारे पिताजी तुम्हें ढूंढ पायेंगे तब तक तुम अवश्य ही मर जाओगी।"

राजकुमारी ने रोना शुरू कर दिया। "मैं भूखी नहीं मरना चाहती", वह सुबक रही थी। "मैं मरना नहीं चाहती। लेकिन . . ." और उसने उन सबके चेहरे देखने शुरू कर दिये जो उसे देख रहे थे। अंततः उसकी निगाह चालू लोमड़ पर टिक गयी।

"श्रीमान लोमड़!" उसने फुसलाते हुए कहा। "तुम्हें धूर्त्त और चालाक माना जाता है। निःसंदेह तुम मेरी सहायता करोगे। यदि तुम मुझे यहां से बाहर निकाल दो तो मैं तुम्हें पुरस्कार दूंगी। मैं तुम्हें सोना भी दूंगी। सोने के सिक्के! और भी बहुत सारा पैसा!"

लेकिन उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब चालू ने इंकार में सिर हिला दिया। "कुछ चीजें ऐसी होती हैं जिन्हें संसार का सारा सोना भी नहीं खरीद

सकता", उसने उत्तर दिया और एक गीत गाना शुरू कर दिया जो इस प्रकार था —

पैसे से सुन लो रे भैया! सब कुछ मिल न पाता . . .
चाहो तो खरीद लो बहुत माल-असबाब
हीरे की अंगूठी, रिबन चमकदार और लाल
लेकिन सच्चा मित्र कभी, पैसे से मिल न पाता . . .
रुकती नहीं भावना की धारा पैसे से मीत
पैसे से न हुई आज तक किसी दर्द पर जीत
पैसे से ओ भाई मेरे, प्यार नहीं मिल पाता . . .

"हां, हां, उस बेवकूफ लकड़हारे ने भी ऐसा ही कुछ कहा था जैसा तुम कह रहे हो", राजकुमारी ने तीखे स्वर में कहा।

उसके बाद उसने एक बार फिर से धमकी दी, "थोड़ा रुको! मैं तुम्हें बताती हूं। मुझे यहां से जरा बाहर निकलने दो। मैं तुम सबको सजा दूंगी। मेरे पिताजी सबको देख लेंगे।"

"तो ठीक है, अब तुम इस गड्ढे से बाहर निकलने के लिए जो कुछ कर सकती हो कर लो", पपरी ने शांत भाव से कहा। उसके बाद उसने अन्य लोगों की तरफ घूम कर कहा, "आओ, चलो हम लोग चलकर देखते हैं कि बेचारे दीपू का क्या हाल है?" फिर वे लोग राजकुमारी को उसके भाग्य पर छोड़कर चले गये।





राजकुमारी ने सबक सीखा

मित्रों ने दीपू को एक पेड़ से बंधा पाया, जहां पर राजकुमारी उसे छोड गयी थी। दीपू अपने मित्रों को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। कुलार, जो सोनार बागान में रहने आयी थी अब इस समूह की सदस्य बन गयी थी। लेकिन दीपू को यह सुनकर आघात लगा कि उन लोगों ने राजकुमारी के साथ ऐसा व्यवहार किया था।

"अब, यह सब गलत हुआ", उसने उनसे धीरे से कहा। "सोनार बागान में कोई भी प्रतिशोधी नहीं है। सोनार बागान में कोई इस तरह का व्यवहार भी नहीं करता।" हरी ने टोकते हुए कहा, "राजकुमारी इसी सजा की अधिकारी थी।"

दीपू ने इंकार में अपना सिर हिलाया, "नहीं, यह ठीक नहीं है।" उसने दोहराते हुए कहा, "याद करो हैली साहब ने क्या कहा था कि प्रेम को बढ़ाना। यदि हम राजकुमारी की सहायता करें तो शायद वह बदल जाये। वह एक अच्छी इंसान बन जाये। मेरे विचार से हमें गड्ढे पर वापिस चलना चाहिये। और उसे बचाना चाहिये।"

"वाकई यह एक अच्छा विचार है", पपरी ने व्यंग्य से कहा। "यहां तो हम लोग तुम्हारे बारे में चिंता कर रहे थे, और तुम राजकुमारी की चिंता कर रहे हो।"

"हां, हम तुम्हें तुम्हारे मित्र लकड़हारे के पास वापिस ले जाने के लिए आये हैं", हरी ने कहा। "लेकिन तुम वापिस गड्ढे के पास जाकर उस दुष्ट राजकुमारी को बचाना चाहते हो।"

"हां, वाकई मैं यही करना चाहता हूं", दीपू ने निष्कपट हो कर कहा। "यदि तुम मेरे मित्र हो तो, चलो हमें चलकर राजकुमारी को बचाना चाहिये।"



"मैं समझ गया तुम ऐसे क्यों हो गये हो क्योंकि तुमने प्रेम का सितारा अपने गले में पहना हुआ है", बंटी ने ठंडी सांस भरते हुए कहा।

"तब तो ठीक है, मैं वैसा ही करना चाह रहा हूं जैसाकि तुम चाहते हो।"

"मैं भी ऐसा ही करूंगा", पायल ने कहा।

"मैं भी ऐसा ही करूंगा", बुला ने कहा और फिर सभी इस बात पर राजी हो गये।

वे गड्ढे पर वापिस आ गये वहां उन्हें राजकुमारी रोती हुई मिली। उसने इन सबके पहुंचते ही कहा कि उसे भूख और प्यास लग रही है।

"भूख और प्यास", दीपू ने सहानुभूतिपूर्वक कहा। "थोड़ा रुको, हम तुम्हारी समस्या हल करते हैं।" उसने पपरी को आदेश दिया कि वह राजकुमारी के लिए कुछ ताजा फल ले आये और मोटू से उसे पानी पिलाने के लिए कहा।

पपरी गया और जाकर एक पेड़ से कुछ सेब तोड़ लाया तथा उन्हें गड्ढे में राजकुमारी एवं उसके संतरी के लिए फेंक दिया।

मोटू पास के ही एक झरने से अपनी सूंड में पानी भर लाया और उसे गड्ढे में गिराकर कैदियों को पानी पिलाने लगा।

खाने-पीने के बाद, राजकुमारी ने राहत महसूस की। वह जानवरों की मेहरबानी के प्रति कृतज्ञ थी और वह अपने द्वारा किये गये व्यवहार पर लज्जित थी।

"धन्यवाद", उसने कहा। "दीपू जो कुछ मैंने तुम्हारे साथ किया उसके लिए मुझे क्षमा कर दो। लेकिन यदि तुम मुझे यहां से बाहर निकाल दो तो मैं तुमसे वादा करती हूं कि अच्छा इंसान बनने का यत्न करूंगी।"

"क्या तुम वाकई ऐसा वादा कर रही हो?" दीपू ने प्रसन्न होते हुए आश्चर्य से पूछा। "यदि तुम अच्छा इंसान बनने का वादा करती हो तो हम सभी तुम्हारे मित्र बन जायेंगे।"

"हां, मैं वादा करती हूं", राजकुमारी ने निष्कपटता से कहा। "मैं प्रसन्न हूं कि तुम सब मेरे मित्र बन जाओगे। तुम्हें पता है कि मेरा कभी कोई सच्चा मित्र नहीं था। शायद इसीलिए मैं इतनी खराब हो गयी थी।"

"चिंता मत करो, हम लोग तुम्हें बिना देर किये बाहर निकाल लेंगे", दीपू ने कहा और उसने फौरन मोटू से राजकुमारी और संतरी को गड्ढे से बाहर निकालने के लिए कहा।

मोटू ने बहुत आराम से राजकुमारी को बाहर निकाल लिया और आजाद

कर दिया। उसने दीपू और अन्य लोगों को अपने घर चाय पर आने का निमंत्रण दिया। "मैं तुम्हें अपने पिताजी से मिलवाना चाहती हूं। वे तुम से मिलकर बहुत खुश होंगे।"

"यह तुम्हारी मेहरबानी है", दीपू ने कृतज्ञतापूर्वक कहा। "लेकिन मुझे अब अपने मित्र मंगल से मिलने के लिए चलना चाहिए। वह अवश्य ही मेरे लिए बहुत चिंतित होगा।"

"हां, मुझे पता है", राजकुमारी ने कहा। "यही अच्छा रहेगा कि तुम तुरंत जाकर अपने मित्र से मिलो। लेकिन किसी और दिन मेरे पास आना मत भूलना।"

"हम शीघ्र ही आने का वादा करते हैं", मित्रों ने एक स्वर में कहा और राजकुमारी से विदा लेकर मंगल से मिलने चल दिये।

उस दिन से राजकुमारी में परिवर्तन आ गया था। वह भली और दयालु बन गयी थी और शीघ्र ही गांव में सब उससे प्रेम करने लगे थे। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि मंगल और सुखी, दीपू को देखकर बहुत प्रसन्न हुए। मंगल ने अपनी बांहें उसके गले में डाल दीं और सुखी ने फिर से एक बार उसके माथे पर चुंबन दिया। दीपू ने उन दोनों से सोनार बागान के मित्रों का परिचय करवाया। सुखी ने एक बड़ी दावत दी और सभी खाने बैठ गये। बाद में, सभी मित्र वापिस सोनार बागान जाने के लिए उठ गये।

"क्या तुम हमारे साथ वापिस चल रहे हो, दीपू?" पपरी ने पूछा।

दीपू हां कहने ही वाला था कि तभी उसने मंगल और सुखी के मुंह की ओर देखा। वह कह सकता था कि उसे खोकर वे उदास हो जायेंगे। उसने अपने मित्रों से कहा, "मैं मंगल और सुखी के साथ कुछ समय तक रहना चाहता हूं। इन्हें मेरी आवश्यकता है। लेकिन मैं वादा करता हूं जल्दी ही तुमसे मिलने सोनार बागान आऊंगा।" मंगल और सुखी प्रसन्न थे कि दीपू ने वहां रुकने का निर्णय किया था। उसके मित्रों ने अब उनसे विदा ली और चले गये।



मंगल के लिए भेंट

कुछ दिनों बाद एक सुबह दीपू जल्दी उठ गया। सूरज निकल आया था और आकाश भी स्वच्छ नीला था। दीपू अपने छप्पर से बाहर आया तो देखा कि मंगल और सुखी पहले ही जाग चुके थे।

"क्या! इतनी जल्दी उठ गये?" दीपू ने टिप्पणी की।

"हां, हमें शीघ्र ही लकड़ी काटने सोनार बागान चलना है", मंगल ने समझाते हुए कहा। "आज लक्ष्मी पूजन का त्यौहार है और हमें जल्दी ही घर वापिस भी आना है। सुखी चाहती है कि हम सूर्य डूबने से पहले घर लौट आयें और उसके साथ त्यौहार मनायें।"

"लक्ष्मी पूजन का त्यौहार", दीपू ने परेशान होकर दोहराया। "यह क्या है?"

"लक्ष्मी धन की देवी हैं", सुखी ने समझाया।

"हमारे यहां का रिवाज है कि आज के दिन लक्ष्मी पर बहुत-सी भेंट चढ़ा कर उसकी पूजा की जाती है। देवी के स्वागत में हम अपने घर के बाहर छोटे-छोटे दीये भी जलाते हैं। अगर उसे जलते हुए दीये न मिलें तो वह हमारे घर में प्रवेश नहीं करेगी और फिर हमारा सौभाग्य अच्छा नहीं होगा।"

"ठीक है, लेकिन यह कितना हास्यास्पद लगता है", मंगल ने उदास भाव से मुस्कराते हुए कहा। "हर वर्ष तुम लक्ष्मी देवी की पूजा करती हो, और भेंटें भी चढ़ाती हो, दीये भी जलाती हो। फिर भी अभी तक हमें सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ। हम हमेशा की तरह गरीब हैं।"

"मेरे विचार से तुम ठीक नहीं कह रहे हो", सुखी ने प्रसन्न होकर टोकते हुए कहा। "हो सकता है कि हमारे पास धन थोड़ा ही हो लेकिन हमारे पास प्यार और खुशियां हैं। हम उसी से धनवान हैं। तुम जानते हो कि ये वो चीजें हैं जिन्हें पैसे से नहीं खरीदा जा सकता।"

"मैं यह समझ सकता हूं", मंगल ने संदेह प्रकट करते हुए कहा। "फिर भी मेरी इच्छा है कि हमारे पास भोजन के लिए पर्याप्त धन हो। यह कितना दयनीय है कि हमें कई बार भूखा रहना पड़ता है।"

"हां, यह दयनीय है", सुखी ने स्वीकार करते हुए कहा। "लेकिन तुम अपना दिल मत दुखाओ! शायद आज हम पर लक्ष्मी की कृपा हो जाये। हो सकता है कि तुम्हें सोनार बागान में बहुत सारी लकड़ी काटने के लिए मिल जाये। चलो, जाओ! देर मत करो! लेकिन सूरज डूबने से पहले लक्ष्मी पूजन के समय तक वापिस आना मत भूलना।"

"अच्छा", मंगल ने कहा और वह दीपू के साथ चला गया।

दोनों तेजी से चलकर, कुछ ही समय में सोनार बागान पहुंच गये। दीपू वहां वापिस आ कर बहुत प्रसन्न था। वह आसपास अपने पुराने मित्रों को देखने की कोशिश कर रहा था। शीघ्र ही पास से पपरी आया।

"वाह, दीपू!" वह चिल्लाया। "तुम्हें देखकर कितनी खुशी हो रही है। तुम यहां कैसे आये हो?"

"मैं मंगल के साथ आया हूं", दीपू ने कहा और उन दोनों ने बातें शुरू कर दीं। मंगल आसपास ऐसा पेड़ देखने लगा जिसे वह काट सके।

वह शीघ्र ही सिर हिलाता हुआ वापिस आ गया। "एक भी सूखा पेड़ नहीं मिला", उसने कहा। "मुझे डर है कि कहीं आज हमें घर खाली हाथ न लौटना पड़े।"

"फिर तुम हरा पेड़ क्यों नहीं काट लेते?" दीपू ने सुझाव दिया।

"क्या?" मंगल चिल्लाया, उसे यह सुनकर आघात लगा। "यदि मैं हरा पेड़ काटना शुरू कर दूंगा तो जल्दी ही सारी लकड़ी समाप्त हो जायेगी। फिर न तो लोगों के लिए छायादार वृक्ष मिलेंगे, जिनके नीचे बैठ कर वे सुस्ता सकें, न ही पक्षियों और गिलहरियों को घोंसला बनाने के लिए जगह मिलेगी. . . नहीं, यह मैं कभी नहीं कर सकता।"

"यह तुम्हारी महानता है", पपरी ने प्रशंसा करते हुए कहा। "मंगल तुम बहुत भले आदमी हो। तुम्हें पता है कि पेड़ भगवान की चीज होते हैं। इससे मुझे पेड़ों के बारे में लिखी एक कविता की याद आ गयी। मैं उन शब्दों को याद कर सकता हूं। क्या तुम उन्हें सुनना चाहोगे?"

"हां, हम अवश्य सुनना चाहेंगे", मंगल और दीपू ने एक साथ कहा और पपरी सुनाने लगा—

कोई कविता, कथा, गीत नहीं होता पेड़ समान
पेड़ दया है, पेड़ धर्म है, पेड़ ही है ईमान
सारा दिन ईश्वर को ताके, पेड़ों की हर डाली
पत्तों के निज हाथ उठाकर, दे प्रणाम और ताली
गर्मी में सबको छाया दे, हरता सबकी पीड़
बालों में गूंथे रहता है, चिड़ियों के सब नीड़
कविता तो लिख लेते जब-तब मुझ जैसे मतिमंद
लेकिन पेड़ बना सकते हैं केवल ही भगवंत
"कितनी सुंदर कविता है", दीपू ने कहा।

"हां, यह बहुत सुंदर कविता है", मंगल ने भी कहा। "अगर सभी पेड़ काटने वाले इस तरह सोचें तो हमारे सुंदर वन नष्ट होने से बच जायें।" तभी हरी और बंटी वहां आ गये और मोटू, चालू तथा पायल भी। बस, बुला ही नहीं था। वह उनींदा था, वह तालाब में अपने गुलाबी लिली के बिछौने पर ऊंघ रहा था।

"मैंने पपरी की कविता सुनी", हरी ने कहा। "हम यह देखने आये हैं कि वह किस बात से इतना प्रसन्न है। दीपू और मंगल! तुम्हें देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। यह कितना अच्छा हुआ कि तुम सोनार बागान इतनी जल्दी आ गये।"

बंटी, मोटू, पायल और चालू ने भी दीपू का स्वागत किया और वे सभी आपस में गप्पें मारने लगे।

मंगल फिर भी प्रसन्न नहीं था। उस दिन लकड़ी नहीं मिलने का अर्थ था, पैसे का न मिलना। सुखी परेशान हो जायेगी क्योंकि वह लक्ष्मी पूजन का दिन था। अन्य सभी ने जल्दी ही अनुभव किया कि मंगल खुश नहीं था।

"तुम परेशान दिख रहे हो, मंगल!" चालू ने टिप्पणी की। "क्या तुम्हें कोई चिंता सता रही है?"

"मंगल इसलिए चिंतित है क्योंकि उसे कोई भी सूखा पेड़ काटने के लिए नहीं मिला है", दीपू ने समझाया। "लकड़ी न होने का मतलब है, खाना खरीदने के लिए पैसे न होना। इससे सुखी दुखी हो जायेगी। क्योंकि आज लक्ष्मी पूजा है, धन की देवी का त्यौहार। सुखी आशा कर रही होगी कि देवी उन पर आशीर्वाद बरसायेगी और मंगल को बेचने के लिए बहुत-सी लकड़ी मिलेगी। मुझे लगता है ऐसा नहीं हो पायेगा" और उसने ठंडी आह भरी। "यह तो वाकई दुख की बात है", मोटू और अन्य ने कहा। वास्तव में सभी मंगल के दुर्भाग्य

से दुखी थे।

उसी समय कुलार, शकरखोरा वहां आ गयी। वह काफी उल्लसित एवं प्रसन्न थी लेकिन शीघ्र ही उसने अनुभव किया कि सभी दुखी थे।

"क्यों, क्या हुआ?" उसने चिंतित होकर पूछा। पपरी ने उसे बताया कि समस्या क्या थी। सभी को हैरानी हुई जब कुलार ने खुशी से चहचहाते हुए कहा, "यह कोई समस्या नहीं है। तुम सब मेरे साथ आओ। मैं तुम्हें एक रहस्य बताती हूं।" और वह उन्हें रास्ता दिखाने लगी।

सभी थोड़ी उलझन में उसके पीछे पीछे चलने लगे। कुलार उन्हें घने जंगल के बीच छिपी एक गुफा तक ले गयी। वह उसके प्रवेश द्वार तक पहुंच कर बोली, "थोड़ी देर यहीं रुको। पपरी, तुम मेरे साथ आओ।" पपरी और वह गुफा में चले गये। कुछ मिनटों में जब वे बाहर आये तो पपरी एक पुराना, मिट्टी का बर्तन पकड़े हुए था। उसने उसे मंगल के सामने रख दिया और कुलार ने समझाया, "मंगल यह भेंट तुम्हारे लिए है। मुझे यह कल ही अचानक मिली है। मैं सोच रही थी कि इसे किसको दूं। तुम ही इसके सबसे ज्यादा योग्य हो। चलो, मंगल इसे खोलो।"

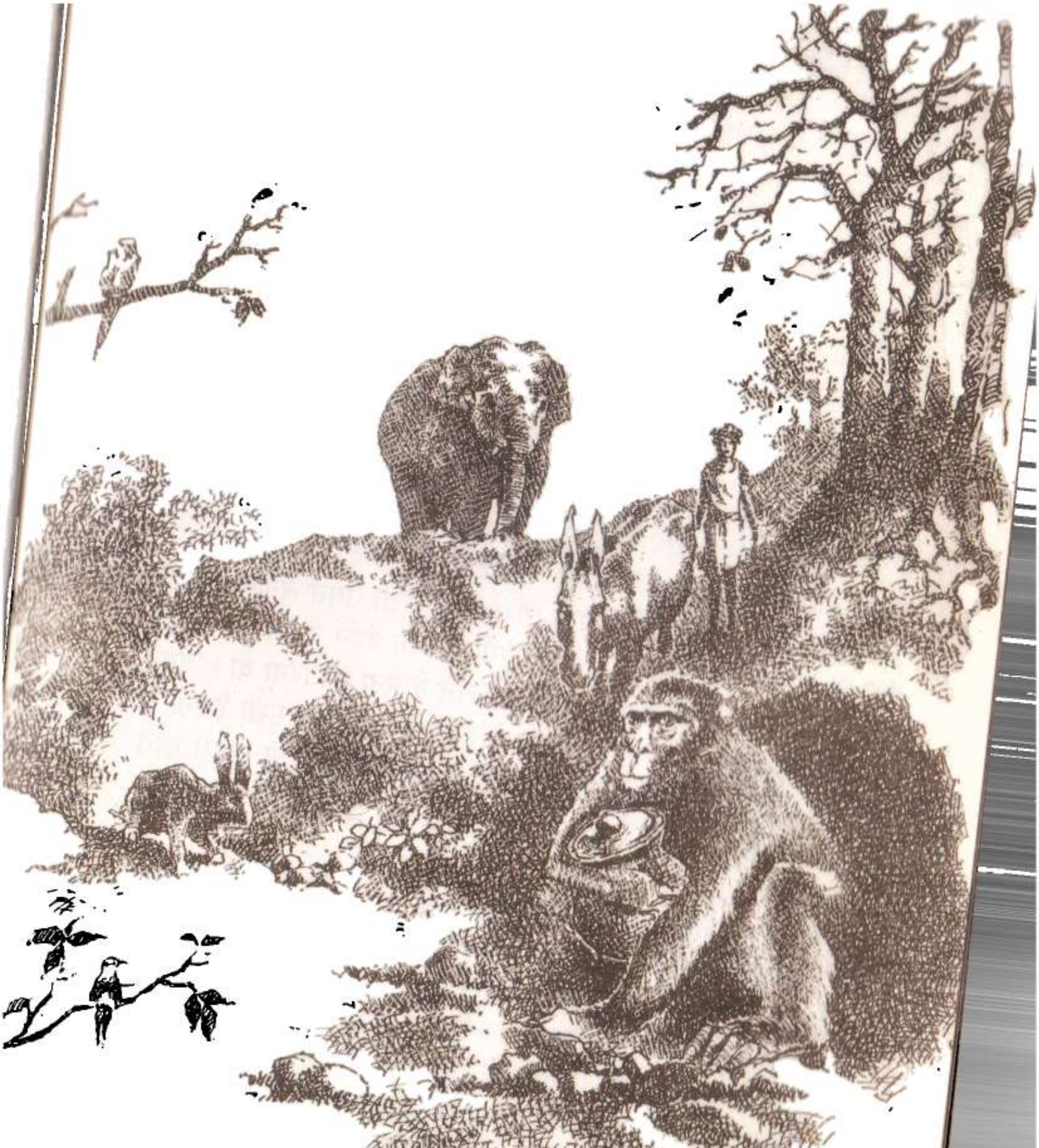
मंगल ने झिझकते हुए बर्तन का ढक्कन उठाया। अगले ही क्षण वह खुशी से चीख पड़ा। "सोना, सोना!" वह चिल्लाया। "बर्तन सोने के सिक्कों से भरा है। कुलार, मैं तुम्हें कैसे धन्यवाद दूं? अब सुखी और मैं धनी हो जायेंगे। अब हमें धन का अभाव नहीं रहेगा। यह सोना निश्चित रूप से लक्ष्मी देवी की भेंट है।"

वह बर्तन उठाने ही वाला था कि अचानक उसे एक विचार कौंधा, "कुलार यह सोना किसका है?" शंकित होते हुए उसने पूछा।

"सचमुच मुझे नहीं मालूम", कुलार ने स्वीकार किया। "मेरा अंदाजा है कि यह जरूर किसी का होगा।"

"अगर यह किसी का है, तो मैं इसे नहीं ले सकता", मंगल ने दृढ़ता से कहा। "मैं वह चीज नहीं ले सकता जो चीज मेरी नहीं है। मान लो वह आदमी अपना सोना वापिस लेने आ जाये। उसे न पाकर वह कितना परेशान होगा नहीं। मेरे लिए इसे लेना गलत होगा। यह तो चोरी करना होगा।"

"मैं ऐसा नहीं मानता, मंगल", दीपू ने कहा। "उस बर्तन की ओर देखो! यह बहुत पुराना है। यह गुफा में कई सालों से पड़ा है। जिसका भी यह सोना होगा, वह निःसंदेह अब तक मर चुका होगा। चलो इसे ले लो। यह सोना



तुम्हारा है।"

लेकिन मंगल ने उसे लेने से इंकार कर दिया जब कि सभी उसे समझाने का प्रयत्न करते रहे। इसलिए कुलार को बर्तन वापिस गुफा में रखना पड़ा और मंगल व दीपू खाली हाथ घर लौटे।

जब वे वापस आये तो उन्होंने सुखी को बहुत खुेश पाया। उसने कई छोटे छोटे दीये जलाये हुए थे और वह लक्ष्मी पूजा के लिए तैयार थी। वह यह सुनकर अधिक परेशान नहीं हुई जब मंगल ने उसे बताया कि वह आज कोई भी लकड़ी नहीं काट पाया।

"चिंता मत करो", उसने कहा। "शायद कल तुम्हारी किस्मत अच्छी हो। आओ हम अपनी पूजा करें और देवी लक्ष्मी का सम्मान करें।" लेकिन पूरी पूजा के दौरान वह उदास रहा। जब सुखी ने दीपू और मंगल को वे मिठाईयां दीं, जो राजकुमारी ने उस विशेष दिन के उपहार के रूप में भेजी थीं तो वह और भी उदास हो गया। "तुम इतने दुखी लग रहे हो कि मुझे लगने लगा है कि लकड़ी न मिल पाने के अलावा भी कोई बात हुई है", सुखी ने कहा। "क्या बात है? जरूर तुम्हारे दिमाग में कुछ चल रहा है।"

पहले मंगल ने कुछ नहीं बताया लेकिन जब सुखी उससे लगातार पूछती रही तो उसने सच्चाई बता दी। उसने उसे सोने के बर्तन के बारे में बताया जो कुलार ने उसे दिया था और उसने उसे लेने से मना कर दिया था। "तुमने सोने के सिक्कों से भरे बर्तन को लेने से इंकार कर दिया?" सुखी हैरानी से चिल्लाई। "ओह, मंगल तुम यह क्यों नहीं समझते कि सोने से हमारी सारी समस्याएं समाप्त हो जातीं? तुम कितने बेवकूफ हो? तुम मूर्ख के सिवाय कुछ भी नहीं हो?"

"मैं बेवकूफ नहीं हूं", मंगल ने बलपूर्वक कहा। "मैं किसी दूसरे का सोना कैसे ले सकता था? मान लो वह आदमी उसे लेने आ जाता तो? मैं उसे चोरी करने का दोषी होता और चोर कहलाता।"

"नहीं ऐसा नहीं होता", सुखी ने तर्क दिया। "यह सोना उस गुफा में शायद कई सालों से पड़ा था। वह जिसका भी होगा वह बहुत पहले मर चुका होगा। क्या तुम नहीं समझते कि यह सोना देवी लक्ष्मी की ओर से हमारे लिए उपहार था और तुमने मूर्ख की तरह उसे लेने से इंकार कर दिया।" वह रोने लगी।

मंगल उसे रोता देखकर बहुत परेशान हो गया। "ठीक है, ठीक है", उसने कहा। "मैं वह सोना ले लूंगा यदि मुझे यह विश्वास हो जाये कि देवी मुझे

वह देना चाहती हैं।"

"यदि कल सुबह जागने पर तुम्हें वह सोना चारपाई के पैताने रखा मिले तो क्या तुम उसे ले लोगे?" दीपू ने कहा जो तब से उनकी बातचीत सुन रहा था। "हां, मैं अवश्य ले लूंगा", मंगल ने उत्तर दिया। "तब मुझे विश्वास हो जायेगा कि यह उपहार मेरे लिए ही था।"

"अच्छा", दीपू ने कहा और उसकी आंखें चमक उठीं।





अंत भला तो सब भला

उस दिन देर रात को, जब मंगल और सुखी सोने चले गये तो दीपू ने छिपकर सोनार बागान तक की लंबी यात्रा की। वहां पहुंचकर उसने जल्दी से अपने सभी मित्रों को जगाया, सिवाय मोटू के, जो कि अपने मित्रों के साथ रात बिताने कहीं गया हुआ था। दीपू ने पूरे समूह को मंगल की सोना स्वीकार करने की शर्त के बारे में बताया।

"तब तो हमें आज रात को ही सोने का बर्तन मंगल के पैताने लाकर रख देना चाहिए", पपरी ने कहा। "जब वह सुबह जागेगा और उसे बर्तन वहां मिलेगा तो वह सोचेगा कि देवी लक्ष्मी ने उसे उसके लिए वहां रखा है। इससे समस्या का समाधान हो जायेगा।"

"हमें फौरन कुलार को ढूंढना चाहिए", हरी ने कहा। "सिर्फ उसी को पता है कि गुफा कहां है।"

वे सभी कुलार को ढूंढने निकल पड़े। उन्हें वह एक पीपल के पेड़ पर सोई हुई मिली। उनके बुलाने पर वह तुरंत आ गयी।

"यह बहुत अच्छा विचार है", जब उन्होंने अपनी बात समाप्त कर ली, तो वह बोली। "लेकिन मैं तुम्हें बताना चाहूंगी कि एक समस्या है। जब हम मंगल को सोना दे रहे थे तो हमें पता नहीं था कि कोई हमारी बातें सुन रहा है। उस समय दो लुटेरे, डाकू और बाकू हमारी बातें सुन रहे थे। वे सोना चोरी करने की योजना बना रहे हैं। वे गुफा पर नजर रखे हुए हैं और बर्तन ले जाने का अवसर तलाश रहे हैं। यदि हम लोग अभी वहां जायेंगे तो वे हमें देख लेंगे। मुझे डर है कि वे हम पर हमला करके बर्तन छीन लेंगे क्योंकि हम सभी काफी छोटे हैं। कितने दुख की बात है कि मोटू यहां नहीं है। वह इन दोनों लुटेरों को डरा कर दूर भगा सकता था।"

"तो मित्र! यह समस्या है", हरी ने कहा। "हम लोग क्या करें?"

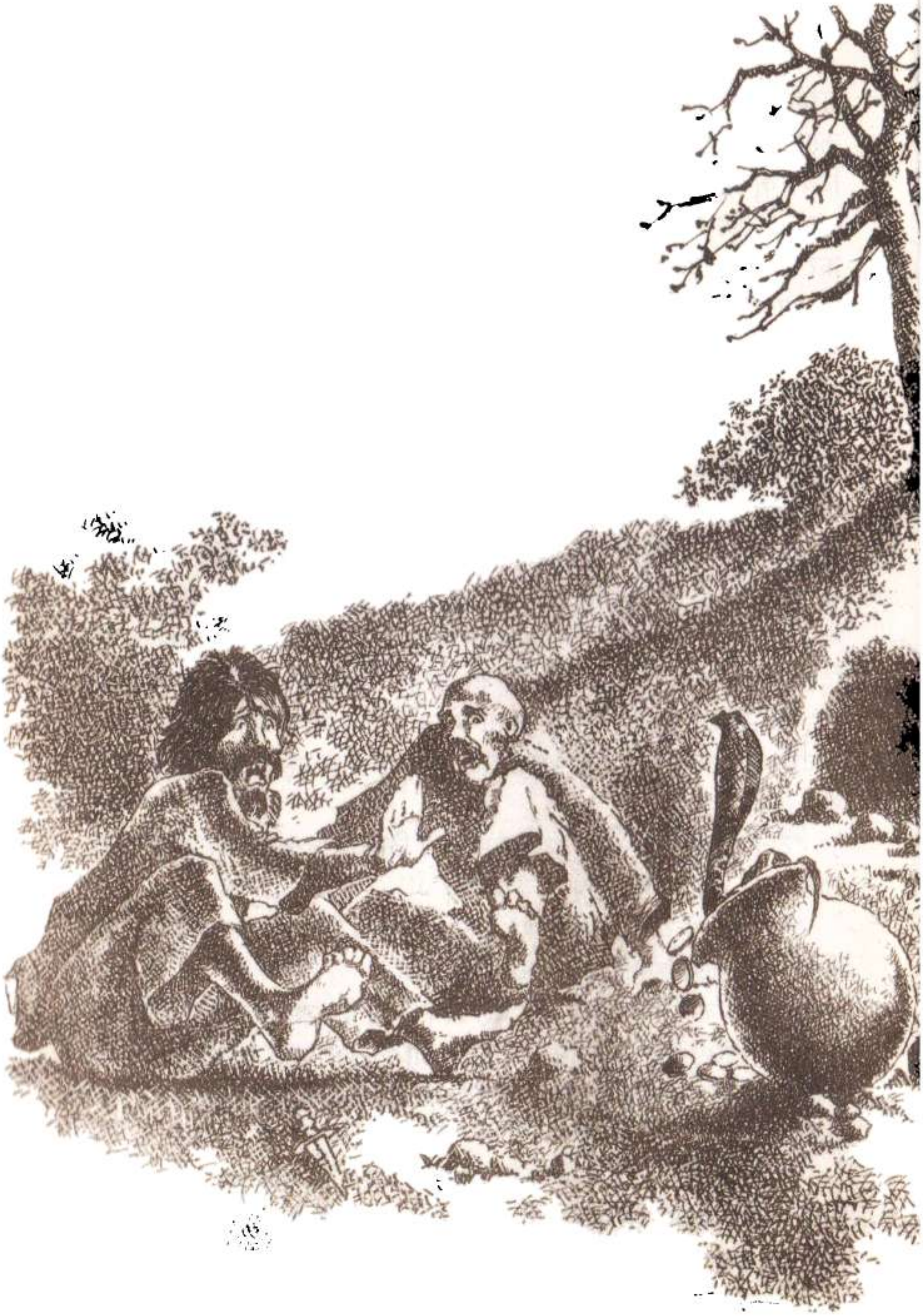
कुलार चुप होकर सोचने लगी। तभी, वह उछलकर बोली, "मुझे एक विचार सूझा है। मैं अपनी नयी सहेली कुमकुम सांपिन से सहायता करने के लिए कहती हूं। आओ, हम लोग चलकर उसे ढूंढते हैं।" यह कहकर वे लोग चल दिये। कुमकुम झाड़ियों के नीचे अपनी बांबी में सो रही थी। दोस्तों ने उसे जगाया। वह सहायता करने के लिए तैयार हो गयी। "हां, मैं लुटेरों को डरा कर भगा सकती हूं", उसने कहा। "बल्कि मुझे वह गुफा भी मालूम है और मैं उस सोने के बर्तन के बारे में भी जानती हूं। मेरी मां ने मुझे इसके बारे में बताया था। उन्होंने कहा था कि, बहुत समय पहले यह सोना एक ऐसे कंजूस राजा का था, जो कभी एक पाई भी खर्च नहीं करता था। उसने यह सोना गुफा में छिपा दिया जिससे उसकी प्रजा को यह सोना उसकी मृत्यु के बाद भी न मिल सके। वह राजा प्रतिदिन छिप कर अपना सोना देखने आता था। एक दिन गुफा के पास उसके सामने देवी लक्ष्मी प्रगट हुईं। उन्होंने उसे कंजूस होने का शाप दिया और उसका बर्तन छीन लिया। राजा ने उसे ढूंढने की कोशिश की लेकिन नाकाम रहा। वह बहुत परेशान हुआ और दुखी हालत में मर गया। उसके बाद देवी लक्ष्मी ने मेरी परदादी को वह सोने का बर्तन दिखाया और सावधानी से उसकी रक्षा करने के लिए कहा। देवी ने कहा कि वह किसी दिन उस बर्तन को किसी योग्य व्यक्ति को दे देंगी। मेरी महान परदादी ने अपनी मृत्यु तक इसकी रक्षा की। तभी से यह बर्तन इस गुफा में पड़ा है।"

"ठीक है, अब तो मुझे विश्वास हो गया कि देवी लक्ष्मी मंगल को ही यह सोना देना चाहती हैं", दीपू ने कहा।

"हां मेरा भी यही विश्वास है", कुलार ने कहा। "इसलिए मुझे यह कल मिला है। आओ हम गुफा पर चलते हैं।"

वे जल्दी जल्दी गुफा की ओर चल दिये। जब वे वहां पहुंचे तो सभी पास के पेड़ों में छिप गये, कुमकुम के सिवाय जो कि आहिस्ता से गुफा में चली गयी। वह बर्तन के पास पहुंची और अंदर जाकर सोने के ऊपर कुंडली मारकर बैठ गयी।

दोनों लुटेरे झाड़ियों के पीछे छिपे हुए थे। जैसे ही चांद कुछ बादलों के पीछे ओझल हुआ और घुप्प अंधेरा हो गया, वे तेजी से गुफा में घुस गये। वे बर्तन लेकर बाहर आये और उसे जमीन पर रख दिया।



"हम लोग जल्दी ही धनी हो जायेंगे!" डाकू ने खुशी में कहा। "हां", बाकू ने भी उतना ही खुश होकर कहा। "आओ हम सोना आपस में बांट लें, आधा तुम्हारा और आधा मेरा।"

"नहीं", डाकू ने दृढ़ता से कहा। "आखिरकार, यह मैं ही था जिसने वह बातचीत सुनी थी और तुम्हें इस धन के बारे में बताया था। मुझे दो तिहाई मिलना चाहिए और तुम्हें एक तिहाई।"

बाकू इस पर राजी नहीं हुआ। शीघ्र ही दोनों में घूंसेबाजी होने लगी। लड़ते लड़ते दोनों बर्तन से टकराये। सोने की जगह कुमकुम बाहर निकली। उसने अपना सिर उठाया, जोर से फुफकार मारी और डसने को तैयार हो गयी।

"सांप! सांप!" डाकू चिल्लाया, "बर्तन में सोना नहीं है।"

"यह सारा तुम्हारा दोष है", बाकू ने चिल्ला कर कहा। "तुम मुझसे झूठ बोले!" और चिल्लाते हुए वह पीछे मुड़कर सरपट भागने लगा, उसके पीछे पीछे डाकू भी भागने लगा।

सभी मित्र छिपी हुई जगहों से बाहर निकल आये। उनके लिए अपनी हंसी रोकना मुश्किल हो रहा था। उन्होंने गर्मजोशी से कुमकुम को सहायता के लिए धन्यवाद दिया।

दीपू ने भी सभी को सहायता के लिए धन्यवाद दिया और पीठ पर सोने का बर्तन रखकर मंगल के गांव के लिए चल पड़ा। वहां पहुंच कर उसने वह बर्तन मंगल की चारपाई के पैताने रख दिया और आहिस्ता से अपने छप्पर में सोने चला गया।

अगली सुबह जब मंगल उठा और उसने सोने का बर्तन देखा तो उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। उसने तुरंत सुखी को बुलाया।

"देखो", उसने आवेश में कहा। "अब मुझे पता लगा कि देवी लक्ष्मी ही चाहती हैं कि यह सोना हमें मिले। उन्होंने यह हमारे लिए यहां रखा है। सुखी हम कितने भाग्यशाली हैं। अब हमारे सारे दुख दूर हो गये।"

"हां, हमारे सारे दुख दूर हो गये", सुखी ने भी उतना ही खुश होकर कहा। उसे अभी भी अपने सौभाग्य पर विश्वास नहीं हो रहा था, "अब तुम्हें कोई काम नहीं करना पड़ेगा। अब तुम्हें कभी लकड़ी भी नहीं काटनी पड़ेगी।"

"हां", मंगल ने खुशी से कहा। "लेकिन मेरा विचार है कि हमें अपनी अच्छी किस्मत को गांव के अन्य लोगों के साथ बांटना चाहिए। हमारे पास काफी सोना है जरूरत से भी ज्यादा। यह अच्छा विचार है कि हरेक को थोड़ा-थोड़ा

दे दिया जाये। तुम क्या कहती हो?"

"मैं तैयार हूं", सुखी ने कहा। "लेकिन हमें राजकुमारी को कुछ भी देने की जरूरत नहीं क्योंकि उसके पिताजी धनी हैं।"

प्रत्येक गरीब गांववासी को धन का हिस्सा मिला और पूरे गांव में खुशियां मनायी गयीं। दीपू यह सब कुछ बड़े ध्यान से देख रहा था। जब खुशियों का आवेश थमा तो उसने एक सुबह कुछ बोलने का निश्चय किया।

"मंगल", उसने कहा। "अब तुम्हें लकड़ी ढोने के लिए मेरी और आवश्यकता नहीं है। मैं सोचता हूं कि मुझे सोनार बागान लौट जाना चाहिए। अभी मेरे लिए इतना ही जोखिम काफी है। अब मैं आराम करना चाहता हूं।"

"ठीक है, दीपू यदि तुम यही चाहते हो तो जाओ", मंगल ने कहा। "लेकिन मुझे तुम्हारे जाने का दुख होगा।"

"तुम मुझे खो नहीं रहे", दीपू ने खुशी से कहा। "मैं कभी कभी तुम्हारे पास आता रहूंगा और तुम भी हमसे मिलने सोनार बागान अवश्य आना।"

"मैं अवश्य आऊंगा", मंगल ने गर्मजोशी से जवाब दिया। "मैं तुम सब को शायद ही भूल पाऊं।"

एक दिन सुबह जब बहुत चमकदार धूप खिली थी तो दीपू ने मंगल और सुखी से विदा ली और खुशी खुशी सोनार बागान के लिए प्रस्थान किया। वह फिर से अपने मित्रों के साथ मिलने को उत्सुक था। "पपरी ठीक कहता था", उसने तेजी से चलते हुए अपने आप से कहा। "यद्यपि मुझे आदमी के इस विशाल संसार में रहने में बहुत मजा आया, लेकिन फिर भी मेरे लिए सबसे अच्छी जगह सोनार बागान ही है। यही वह जगह है जिससे वाकई मैं संबंध रखता हूं।"

मुद्रकः जूपीटर ऑफसेट वर्क्स, शाहदरा, दिल्ली-110 032

रु. 14.00 ISBN 81-237-0896-3

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

